श्री निशीथ सूत्र

।। श्री आगम-गुण-मञ्जूषा ।।

।। શ્રી આગમ-ગુણ-મંજૂષા ।।

।। Sri Agama Guna Manjusa ।।

(સચિત્ર)

प्रेरक-संपादक

अचलगच्छाधिपति प.पू.आ.भ.स्व. श्री गुणसागर सूरीश्वरजी म.सा.

४५ आगमो का संक्षिप्त परिचय

११ अंगसूत्र

१) **श्री आचारांग सूत्र :-** इस सूत्र मे साधु और श्रावक के उत्तम आचारो का सुंदर वर्णन है। इनके दो श्रुतस्कंध और कुल २५ अध्ययन है। द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग और चरणकरणानुयोगोमे से मुख्य चौथा अनुयोग है। उपलब्ध श्लोको कि संख्या २५०० एवं दो चुलिका विद्यमान है।

२) **श्री सूत्रकृतांग सूत्र :-** श्री सुयगडांग नाम से भी प्रसिद्ध इस सूत्र मे दो श्रुतस्कंध और २३ अध्ययन के साथ कुलमिला के २००० श्लोक वर्तमान मे विद्यमान है। १८० क्रियावादी, ८४ अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी अपरंच द्रव्यानुयोग इस आगम का मुख्य विषय रहा है।

३) **श्री स्थानांग सूत्र :-** इस सूत्र ने मुख्य गणितानुयोग से लेकर चारो अनुयोंगो कि बाते आती है। एक अंक से लेकर दस अंको तक मे कितनी वस्तुअें है इनका रोचक वर्णन है, ऐसे देखा जाय तो यह आगम की शैली विशिष्ट है और लगभग ७६०० श्लोक है।

४) **श्री समवायांग सूत्र :-** यह सूत्र भी ठाणांगसूत्र की भांति कराता है। यह भी संग्रहग्रंथ है। एक से सो तक कौन कौन सी चीजे है उनका उल्लेख है। सो के बाद देढसो, दोसो, तीनसो, चारसो, पांचसो और दोहजार से लेकर कोटाकोटी तक कौनसे कौनसे पदार्थ है उनका वर्णन है। यह आगमग्रंथ लगभग १६०० श्लोक प्रमाण मे उपलब्ध है।

५) **श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र (भगवती सूत्र) :-** यह सबसे बडा सूत्र है, इसमे ४२ शतक है, इनमे भी उपविभाग है, १९२५ उद्देश है। इस आगमग्रंथ मे प्रभु महावीर के प्रथम शिष्य श्री गौतमस्वामी गणधरादि ने पुछे हुए प्रश्नो का प्रभु वीर ने समाधान किया है। प्रश्नोत्तर संकलन से इस ग्रंथ की रचना हुइ है। चारो अनुयोगो कि बाते अलग अलग शतको मे वर्णित है। अगर संक्षेप मे कहना हो तो श्री भगवतीसूत्र रत्नो का खजाना है। यह आगम १५००० से भी अधिक संकलित श्लोको मे उपलब्ध है।

६) **ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र :-** यह सूत्र धर्मकथानुयोग से है। पहले इसमे साडेतीन करोड कथाअे थी अब ६००० श्लोको मे उन्नीस कथाअें उपलब्ध है।

७) **श्री उपासकदशांग सूत्र :-** इसमें बाराह व्रतो का वर्णन आता है और १० महाश्रावको के जीवन चरित्र है, धर्मकथानुंयोग के साथ चरणकरणानुयोग भी इस सूत्र मे सामील है। इसमे ८०० से ज्यादा श्लोक है।

८) **श्री अन्तकृद्दशांग सूत्र :-** यह मुख्यत: धर्मकथानुयोग मे रचित है। इस सूत्र में श्री शत्रुंजयतीर्थ के उपर अनशन की आराधना करके मोक्ष मे जानेवाले उंत्तम जीवो के छोटे छोटे चरित्र दिए हुए है। फिलाल ८०० श्लोको मे ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है।

९) **श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र :-** अंत समय मे चारित्र की आराधना करके अनुत्तर विमानवासी देव बनकर दूसरे भव मे फीर से चारित्र लेंकर मुक्तिपद को प्राप्त करने वाले महान् श्रावको के जीवनचरित्र है इसलीए मुख्यतया धर्मकथानुयोगवाला यह ग्रंथ २०० श्लोक प्रमाणका है।

१०) **श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र :-** इस सूत्र मे मुख्यविषय चरणकरणानुयोग है। इस आगम में देव-विद्याधर-साधु-साध्वी श्रावकादि ने पुछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्रभु ने कैसे दिया इसका वर्णन है। जो नंदिसूत्र मे आश्रव-संवरद्वार है ठीक उसी तरह का वर्णन इस सूत्र मे भी है। कुलमिला के इसके २०० श्लोक है।

११) **श्री विपाक सूत्र :-** इस अंग मे २ श्रुतस्कंध है पहला दु:खविपाक और दूसरा सुखविपाक, पहेले में १० पापीओं के और दूसरे में १० धर्मीओ के द्रष्टांत है मुख्यतया धर्मकथानुयोग रहा है। १२०० श्लोक प्रमाण का यह अंगसूत्र है।

१२ उपांग सूत्र

१) **श्री औपपातिक सूत्र :-** यह आगम आचारांग सूत्र का उपांग है। इस मे चंपानगरी का वर्णन १२ प्रकार के तपों का विस्तार कोणिक का जुलुस अम्बडपरिव्राजक के ७०० शिष्यो की बाते है। १५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

२) **श्री राजप्रश्नीय सूत्र :-** यह आगम सुयगडांगसूत्र का उपांग है। इसमें प्रदेशीराजा का अधिकार सूर्याभदेव के जरीए जिनप्रतिमाओं की पूजा का वर्णन है। २००० श्लोको से भी अधिक प्रमाण का ग्रंथ है।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३) **श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र :-** यह ठाणांगसूत्र का उपांग है। जीव और अजीव के बारे मे अच्छा विश्लेषण किया है। इसके अलावा जम्बुद्विप की जगती एवं विजयदेव ने कि हुइ पूजा की विधि सविस्तर बताइ है। फिलाल जिज्ञासु ४ प्रकरण, क्षेत्रसमासादि जो पढते है वह सभी ग्रंथे जीवाभिगम अपरन्च पन्नवणासूत्र के ही पदार्थ है। यह आगम सूत्र ४७०० श्लोक प्रमाण का है।

४) **श्री प्रज्ञापना सूत्र-** यह आगम समवायांग सूत्र का उपांग है। इसमे ३६ पदो का वर्णन है। प्राय: ८००० श्लोक प्रमाण का यह सूत्र है।

५) **श्री सुर्यप्रज्ञप्ति सूत्र :-**

६) **श्री चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र :-** इस दो आगमो मे गणितानुयोग मुख्य विषय रहा है। सूर्य, चन्द्र, ग्रहादि की गति, दिनमान ऋतु अयनादि का वर्णन है, दोनो आगमो मे २२००, २२०० श्लोक है।

७) **श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र :-** यह आगम भी अगले दो आगमों की तरह गणितानुयोग मे है। यह ग्रंथ नाम के मुताबित जंबूद्विप का सविस्तर वर्णन है। ६ आरे के स्वरूप बताया है। ४५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

८) **श्री निरयावली सूत्र :-** इन आगम ग्रंथो में हाथी और हारादि के कारण नानाजी का दोहित्र के साथ जो भयंकर युद्ध हुआ उस मे श्रेणिक राजा के १० पुत्र मरकर नरक मे गये उसका वर्णन है।

९) **श्री कल्पावतंसक सूत्र :-** इसमें पद्मकुमार और श्रेणिकपुत्र कालकुमार इत्यादि १० भाइओं के १० पुत्रों का जीवन चरित्र है।

१०) **श्री पुष्पिका उपांग सूत्र :-** इसमें १० अध्ययन है। चन्द्र, सूर्य, शुक्र, बहुपुत्रिका देवी, पूर्णभद्र, माणिभद्र, दत्त, शील, जल, अणाढ्य श्रावक के अधिकार है।

११) **श्री पुष्पचुलीका सूत्र :-** इसमें श्रीदेवी आदि १० देवीओ का पूर्वभव का वर्णन है।

१२) **श्री वृष्णिदशा सूत्र :-** यादववंश के राजा अंधकवृष्णि के समुद्रादि १०पुत्र, १० मे पुत्र वासुदेव के पुत्र बलभद्रजी, निषधकुमार इत्यादि १२ कथाएं है। अंतके पांचो उपांगो को निरियावली पन्चक भी कहते है।

दश प्रकीर्णक सूत्र

१) **श्री चतुशरण प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में अरिहन्त, सिद्ध, साधु और गच्छधर्म के आचार के स्वरूप का वर्णन एवं चारों शरण की स्वीकृति है।

२) **श्री आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस आगम का विषय है अंतिम आराधना और मृत्युसुधार

३) **श्री भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में पंडित मृत्यु के तीन प्रकार (१) भक्त परिज्ञा मरण (२) इंगिनी मरण (३) पादोपगमन मरण इत्यादि का वर्णन है।

६) **श्री संस्तारक प्रकीर्णक सूत्र :-** नामानुसार इस पयन्ने में संथारा की महिमा का वर्णन है। इन चारों पयन्ने पठन के अधिकारी श्रावक भी है।

७) **श्री तंदुल वैचारिक प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने को पूर्वाचार्यगण वैराग्य रस के समुद्र के नाम से चीन्हित करते है। १०० वर्षो में जीवात्मा कितना खानपान करे इसकी विस्तृत जानकारी दी गई है। धर्म की आराधना ही मानव मन की सफलता है। ऐसी बातों से गुंफित यह वैराग्यमय कृति है।

८) **श्री चन्दाविजय प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु सुधार हेतु कैसी आराधना हो इसे इस पयन्ने में समजाया गया है।

९) **श्री देवेन्द्र-स्तव प्रकीर्णक सूत्र :-** इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तुति एवं इन्द्र संबधित अन्य बातों का वर्णन है।

१०A) **श्री मरणसमाधि प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु संबधित आठ प्रकरणों के सार एवं अंतिम आराधना का विस्तृत वर्णन इस पयन्ने में है।

१०B) **श्री महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में साधु के अंतिम समय में किए जाने योग्य पयन्ना एवं विविध आत्महितकारी उपयोगी बातों का विस्तृत वर्णन हे।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०C) **श्री गणिविद्या प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयत्रे में ज्योतिष संबधित बड़े ग्रंथो का सार है।

उपरोक्त दसों पयन्नों का परिमाण लगभग २५०० श्लोकों में बध्य हे। इसके अलावा २२ अन्य पयन्ना भी उपलब्ध हैं। और दस पयन्नों में चंदाविजय पयन्नो के स्थान पर गच्छाचार पयन्ना को गिनते हैं।

छह छेद सूत्र

(१) निशिथ सूत्र (२) महानिशिथ सूत्र (३) व्यवहार सूत्र (४) जीतकल्प सूत्र (५) पंचकल्प सूत्र (६) दशा श्रुतस्कंध सूत्र

इन छेद सूत्र ग्रन्थों में उत्सर्ग, अपवाद और आलोचना की गंभीर चर्चा है। अति गंभीर केवल आत्मार्थ, भवभीरू, संयम में परिणत, जयणावंत, सूक्ष्म दष्टि से द्रव्यक्षेत्रादिक विचार धर्मदष्टि से करने वाले, प्रतिपल छहकाया के जीवों की रक्षा हेतु चिंतन करने वाले, गीतार्थ, परंपरागत उत्तम साधु, समाचारी पालक, सर्वजीवो के सच्चे हित की चिंता करने वाले ऐसे उत्तम मुनिवर जिन्होंने गुरु महाराज की निश्रा में योगद्वहन इत्यादि करके विशेष योग्यता अर्जित की हो ऐसे मुनिवरों को ही इन ग्रन्थों के अध्ययन पठन का अधिकार है।

चार मूल सूत्र

१) **श्री दशवैकालिक सूत्र :-** पंचम काल के साधु साध्वीओं के लिए यह आगमग्रन्थ अमृत सरोवर सरीखा है। इसमें दश अध्ययन हैं तथा अन्त में दो चूलिकाए रतिवाक्या व, विविक्त चरिया नाम से दी हैं। इन चूलिकाओं के बारे में कहा जाता है कि श्री स्थूलभद्रस्वामी की बहन यक्षासाध्वीजी महाविदेहक्षेत्र में से श्री सीमंधर स्वामी से चार चूलिकाए लाइ थी। उनमें से दो चूलिकाएं इस ग्रंथ में दी हैं। यह आगम ७०० श्लोक प्रमाण का है।

२) **श्री उत्तराध्ययन सूत्र :-** परम कृपालु श्री महावीरभगवान के अंतिम समय के उपदेश इस सूत्र में हैं। वैराग्य की बातें और मुनिवरों के उच्च आचारों का वर्णन इस आगम ग्रंथ में ३६ अध्ययनों में लगभग २००० श्लोकों द्वारा प्रस्तुत हें।

३) **श्री निर्युक्ति सूत्र :-** चरण सत्तरी-करण सत्तरी इत्यादि का वर्णन इस आगम ग्रन्थ में है। पिंडनिर्युक्ति भी कई लोग ओघ निर्युक्ति के साथ मानते हैं अन्य कई लोग इसे अलग आगम की मान्यता देते हैं। पिंडनिर्युक्ति में आहार प्राप्ति की रीत बताइ हें। ४२ दोष कैसे दूर हों और आहार करने के छह कारण और आहार न करने के छह कारण इत्यादि बातें हैं।

४) **श्री आवश्यक सूत्र :-** छह अध्ययन के इस सूत्र का उपयोग चतुर्विध संघ में छोट बडे सभी को है। प्रत्येक साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका के द्वारा अवश्य प्रतिदिन प्रात: एवं सायं करने योग्य क्रिया (प्रतिक्रमण आवश्यक) इस प्रकार हैं :-

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण (५) कार्योत्सर्ग (६) पच्चक्खाण

दो चूलिकाए

१) **श्री नंदी सूत्र :-** ७०० श्लोक के इस आगम ग्रंन्थ में परमात्मा महावीर की स्तुति, संघ की अनेक उपमाए, २४ तीर्थंकरों के नाम ग्यारह गणधरों के नाम, स्थविरावली और पांच ज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

२) **श्री अनुयोगद्वार सूत्र :-** २००० श्लोकों के इस ग्रन्थ में निश्चय एवं व्यवहार के आलंबन द्वारा आराधना के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गइ है। अनुयोग याने शास्त्र की व्याख्या जिसके चार द्वार है (१) उक्रम (२) निक्षेप (३) अनुगम (४) नय

यह आगम सब आगमों की चावी है। आगम पढने वाले को प्रथम इस आगम से शुरुआत करनी पडती है। यह आगम मुखपाठ करने जैसा है।

॥ इति शम् ॥

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Introduction

45 *Āgamas*, a short sketch

I Eleven *Aṅgas* :

(1) **Ācārāṅga-sūtra :** It deals with the religious conduct of the monks and the Jain householders. It consists of 02 Parts of learning, 25 lessons and among the four teachings on entity, calculation, religious discourse and the ways of conduct, the teaching of the ways of conduct is the main topic here. The Āgama is of the size of 2500 *Ślokas*.

(2) **Sūyagaḍāṅga-sūtra :** It is also known as Sūtra-Kṛtāṅga. It's two parts of learning consist of 23 lessons. It discusses at length views of 363 doctrine-holders. Among them are 180 ritualists, 84 non-ritualists, 67 agnostics and 32 restraint-propounders, though it's main area of discussion is the teaching of entity. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.

(3) **Ṭhāṇāṅga-sūtra :** It begins with the teaching of calculation mainly and discusses other three teachings subordinately. It introduces the topic of one dealing with the single objects and ends with the topic of eight objects. It is of the size of 7600 *Ślokas*.

(4) **Samavāyāṅga-sūtra :** This is an encompendium, introducing 01 to 100 objects, then 150, 200 to 500 and 2000 to crores and crores of objects. It contains the text of size of 1600 *Ślokas*.

(5) **Vyākhyā-prajñapti-sūtra :** It is also known as Bhagavatī-sūtra. It is the largest of all the *Aṅgas*. It contains 41 centuries with subsections. It consists of 1925 topics. It depicts the questions of Gautama *Gaṇadhara* and answers of Lord Mahāvīra. It discusses the four teachings in the centuries. This *Āgama* is really a treasure of gems. It is of the size of more than 15000 *Ślokas*.

(6) **Jñātādharma-Kathāṅga-sūtra :** It is of the form of the teaching of the religious discourses. Previously it contained three and a half crores of discourses, but at present there are 19 religious discourses. It is of the size of 6000 *Ślokas*.

(7) **Upāsaka-daśāṅga-sūtra :** It deals with 12 vows, life-sketches of 10 great Jain householders and of Lord Mahāvīra, too. This deals with the teaching of the religious discourses and the ways of conduct. It is of the size of around 800 *Ślokas*.

(8) **Antagaḍa-daśāṅga-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the religious discourses. It contains brief life-sketches of the highly spiritual souls who are born to liberate and those who are liberating ones : they are Andhaka Vṛṣṇi, Gautama and other 9 sons of queen Dhāriṇī, 8 princes like Akṣobhakumāra, 6 sons of Devaki, Gajasukumāra, Yādava princes like Jāli, Mayālī, Vasudeva Kṛṣṇa, 8 queens like Rukmiṇī. It is available of the size of 800 *Ślokas*.

(9) **Anuttarovavāyi-daśāṅga-sūtra :** It deals with the teaching of the religious discourses. It contains the life-sketches of those who practise the path of religious conduct, reach the *Anuttara Vimāna*, from there they drop in this world and attain Liberation in the next birth. Such souls are Abhayakumāra and other 9 princes of king Śrenika, Dīrghasena and other 11 sons, Dhannā *Aṇagāra*, etc. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(10) **Praśna-vyākaraṇa-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the ways of conduct. As per the remark of the Nandī-sūtra, it contained previously Lord Mahāvīra's answers to the questions put by gods, Vidyādharas, monks, nuns and the Jain householders. At present it contains the description of the ways leading to transgression and the self-control. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(11) **Vipāka-sūtrāṅga-sūtra :** It consists of 2 parts of learning. The first part is called the Fruition of miseries and depicts the life of 10 sinful souls, while the second part called the Fruition of happiness narrates illustrations of 10 meritorious souls. It is available of the size of 1200 *Ślokas*.

II Twelve *Upāṅgas*

(1) **Uvavāyi-sūtra :** It is a subservient text to the *Ācārāṅga-sūtra*. It deals with the description of Campā city, 12 types of austerity, procession-arrival of Koṇika's marriage, 700 disciples of the monk Ambaḍa. It is of the size of 1000 *Ślokas*.

(2) **Rāyapaseṇī-sūtra :** It is a subservient text to Sūyagaḍāṅga-sūtra. It depicts king Pradesī's jurisdiction, god Sūryābha worshipping the Jina idols, etc. It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) **Jīvābhigama-sūtra :** It is a subservient text to Ṭhāṇāṅga-sūtra. It deals with the wisdom regarding the self and the non-self, the Jambū continent and its areas, etc. and the detailed description of the veneration offered by god Vijaya. The four chapters on areas, society, etc. published recently are composed on the line of the topics of this *Sūtra* and of the Pannāvaṇā-sūtra. It is of the size of 4700 *Ślokas*.

(4) **Pannāvaṇā-sūtra :** It is a subservient text to the Samavāyāṅga-sūtra. It describes 36 steps or topics and it is of the size of 8000 *Ślokas*.

(5) **Sūrya-prajñapti-sūtra** and

(6) **Candra-prajñapti-sūtra :** These two falls under the teaching of the calculation. They depict the solar and the lunar transit, the movement of planets, the variations in the length of a day, seasons, northward and the southward solstices, etc. Each one of these *Āgamas* are of the size of 2200 *Ślokas*.

(7) **Jambūdvīpa-prajñapti-sūtra :** It mainly deals with the teaching of the calculations. As it's name indicates, it describes at length the objects of the Jambū continent, the form and nature of 06 corners (*āra*). It is available in the size of 4500 *Ślokas*.

Nirayāvalī-pañcaka :

(8) **Nirayāvalī-sūtra :** It depicts the war between the grandfather and the daughter's son, caused of a necklace and the elephant, the death of king Ceṭika's 10 sons who attained hell after death. This war is designated as the most dreadful war of the Downward (*avasarpiṇī*) age.

(9) **Kalpāvataṁsaka-sūtra :** It deals with the life-sketches of Kālakumara and other 09 princes of king Śreṇika, the life-sketch of Padamakumara and others.

(10) **Pupphiyā-upāṅga-sūtra :** It consists of 10 lessons that covers the topics of the Moon-god, Sun-god, Venus, queen Bahuputrikā, Pūrṇabhadra, Maṇibhadra, Datta, Śila, Bala and Aṇāḍḍhiya.

(11) **Pupphaculīya-upāṅga-sūtra :** It depicts previous births of the 10 queens like Śrīdevī and others.

(12) **Vahnidaśā-upāṅga sūtra :** It contains 10 stories of Yadu king Andhakavṛṣṇi, his 10 princes named Samudra and others, the tenth one Vāsudeva, his son Balabhadra and his son Niṣaḍha.

III Ten *Payannā-sūtras* :

(1) **Āurapaccakhāṇa-sūtra :** It deals with the final religious practice and the way of improving (the life so that the) death (may be improved).

(2) **Bhattaparinnā-sūtra :** It describes (1) three types of *Paṇḍita* death, (2) knowledge, (3) Iṅgini devotee (4) *Pādapopagamana*, etc.

(4) **Santhāraga-payannā-sūtra :** It extols the *Saṁstāraka*.

**** These four payannās can also be learnt and recited by the Jain householders. ****

(5) **Tandula-viyāliya-payannā-sūtra :** The ancient preceptors call this Payannā-sūtra as an ocean of the sentiment of detachment. It describes what amount of food an individual soul will eat in his life of 100 years, the human life can be justified by way of practising a religious life.

(6) **Candāvijaya-payannā-sūtra :** It mainly deals with the religious practice that improves one's death.

(7) **Devendrathui-payannā-sūtra :** It presents the hymns to the Lord sung by Indras and also furnishes important details on those Indras.

(8) **Maraṇasamādhi-payannā-sūtra :** It describes at length the final religious practice and gives the summary of the 08 chapters dealing with death.

(9) **Mahāpaccakhāṇa-payannā-sūtra :** It deals specially with what a monk should practise at the time of death and gives various beneficial informations.

(10) **Gaṇivijaya-payannā-sūtra :** It gives the summary of some treatise on astrology.

These 10 Payannās are of the size of 2500 *Ślokas*.

Besides about 22 Payannās are known and even for these above 10 also there is a difference of opinion about their names. The Gacchācāra is taken, by some, in place of the Candāvijaya of the 10 Payannās.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

IV Six *Cheda-sūtras*

(1) Vyavahāra-sūtra, (2) Nisītha-sūtra,
(3) Mahānisītha-sūtra, (4) Pancakalpa-sūtra,
(5) Daśāśruta-skandha-sūtra and (6) Bṛhatkalpa-sūtra.

These Chedasūtras deal with the rules, exceptions and vows.

The study of these is restricted only to those best monks who are (1) serene, (2) introvert, (3) fearing from the worldly existence, (4) exalted in restraint, (5) self-controlled, (6) rightfully descerning the subtlety of entity, territories, etc. (7) pondering over continuously the protection of the six-limbed souls, (8) praiseworthy, (9) exalted in keeping the tradition, (10) observing good religious conduct, (11) beneficial to all the beings and (12) Who have paved the path of Yoga under the guidance of their master.

V Four *Mūlasūtras*

(1) **Daśavaikālika-sūtra :** It is compared with a lake of nectar for the monks and nuns established in the fifth stage. It consists of 10 lessons and ends with 02 Cūlikās called Rativākyā and Vivittacariyā. It is said that monk Sthūlabhadra's sister nun Yakṣā approached Simandhara Svāmī in the Mahāvideha region and received four Cūlikās. Here are incorporated two of them.

(2) **Uttarādhyayana-sūtra :** It incorporates the last sermons of Lord Mahāvīra. In 36 lessons it describes detachment, the conduct of monks and so on. It is available in the size of 2000 *Slokas*.

(3) **Anuyogadvāra-sūtra :** It discusses 17 topics on conduct, behaviour, etc. Some combine Piṇḍaniryukti with it, while others take it as a separate *Āgama*. Piṇḍaniryukti deals with the method of receiving food (*bhikṣā* or *gocarī*), avoidance of 42 faults and to receive food, 06 reasons of taking food, 06 reasons for avoiding food, etc.

(4) **Āvaśyaka-sūtra :** It is the most useful *Āgama* for all the four groups of the Jain religious constituency. It consists of 06 lessons. It describes 06 obligatory duties of monks, nuns, house-holders and housewives. They are : (1) *Sāmāyika*, (2) *Caturviṁśatistava*, (3) *Vandanā*, (4) *Pratikramaṇa*, (5) Kāyotsarga and (6) *Paccakhāṇa*.

VI Two *Cūlikās*

(1) **Nandī-sūtra :** It contains hymn to Lord Mahāvīra, numerous similies for the religious constituency, name-list of 24 *Tīrthaṅkaras* and 11 *Gaṇadharas*, list of *Sthaviras* and the fivefold knowledge. It is available in the size of around 700 *Ślokas*.

(2) **Anuyogadvāra-sūtra :** Though it comes last in the serial order of the 45 *Āgamas*, the learner needs it first. It is designated as the key to all the *Āgamas*. The term *Anuyoga* means explanatory device which is of four types : (1) Statement of proposition to be proved, (2) logical argument, (3) statement of accordance and (4) conclusion.

It teaches to pave the righteous path with the support of firm resolve and wordly involvements.

It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

આગમ ૩૪

ચરણાનુયોગમય નિશીથસૂત્ર - ૩૪

ઉદ્દેશક ---------- ૨૦
ઉપલબ્ધ મૂલપાઠ ---------- ૮૧૨ શ્લોક પ્રમાણ
ગદ્યસૂત્ર ---------- ૧૪૦૫

ઉદ્દેશક	સૂત્રસંખ્યા	ઉદ્દેશક	સૂત્રસંખ્યા
૧	૫૮	૧૧	૯૨
૨	૫૯	૧૨	૪૨
૩	૭૯	૧૩	૭૪
૪	૧૧૧	૧૪	૪૫
૫	૭૭	૧૫	૧૫૪
૬	૭૭	૧૬	૫૦
૭	૯૧	૧૭	૧૫૧
૮	૧૭	૧૮	૬૪
૯	૨૮	૧૯	૩૬
૧૦	૪૭	૨૦	૫૩
	૬૪૪		૭૬૧
			+ ૬૪૪
			૧૪૦૫

ઉદ્દેશક : ૧

આમાં બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રત ભંગ, સુગંધ ગ્રહણ, અન્ય તીર્થિક કે ગૃહસ્થ પાસે કામ કરાવવું જેવાં કે માર્ગ, પાણીની નળી, શીકુ, દોરી, સૂતર કે ઊનના દોરા વગેરે બનાવડાવવા તેમજ સોય, કાતર, નખહરણી, કર્ણ-શોધની, પાત્ર, દંડ, વસ્ત્ર, સદોષ આહાર વગેરે વિષેના પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૨

આમાં પહેલા ઉદ્દેશક પ્રમાણેના કેટલાક તદુપરાંત દ્વિતીય મહાવ્રત, તૃતીય મહાવ્રત, એષણા-સમિતિ અને પરિભોગૈષણા વગેરે જુદા-જુદા પ્રાયશ્ચિત્તો છે.

ઉદ્દેશક : ૩

આમાં એષણા-સમિતિના પ્રાયશ્ચિત્ત જેવાં કે એક જ ઘરમાં બે વાર ભિક્ષાર્થે જવું, આહારની યાચના વગેરે, પગ ધોવા અને શરીરના સંસ્કાર, વશીકરણ યંત્ર બનાવવું, મળ-મૂળત્યાગ સંબંધી અવિવેક વગેરે બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતના પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૪

આમાં રાજા વગેરેને વશ કરવાથી માંડીને કલહ કરવો, પરસ્પર શરીરસંસ્કાર વગેરે વિવિધ વિષયો જણાવી અંતે પરિહાર કલ્પવાળા સાથે આહાર-વ્યવહારના પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૫

આમાં અન્યતીર્થિક કે ગૃહસ્થ પાસે કામ કરાવવાં, વસ્ત્ર સીવડાવવાં, રજોહરણના અનુચિત ઉપયોગ વગેરે ૧૫ જેટલી બાબતોના પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૬-૭

આ બંનેમાં મૈથુન સંકલ્પે નિર્ગ્રંથી સાથે મર્યાદા બહારના વ્યવહાર માટેના પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૮

આમાં એકલવયાથી સ્ત્રી સાથે મર્યાદા બહારનો વ્યવહાર, સ્ત્રી પરિષદમાં કસમયે ધર્મકથા વગેરે સાત કર્મોના પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૯

આમાં છ દોષાયતનોમાં આવાગમન, સ્ત્રી અંગદર્શન, માંસાહાર, રાજ્યાશ્રિત પરિવાર પાસે આહારગ્રહણ વગેરે માટે જુદા-જુદા પ્રાયશ્ચિત્ત બતાવ્યાં છે.

ઉદ્દેશક : ૧૦

આમાં ગુરુજનો સાથે અવિનય, સદોષ આહાર, દીક્ષાર્થીને મિથ્યા પરામર્શ, દોષાનુસાર પ્રાયશ્ચિત્ત ન કરવા, વર્ષાવાસ સંબંધી નિયમોનો ભંગ વગેરે માટે પ્રાયશ્ચિત્ત બતાવ્યાં છે.

ઉદ્દેશક : ૧૧

આમાં પાત્રસંબંધી મર્યાદાઓનો ભંગ કરવો, ધર્મનિંદા, શરીરસંસ્કાર, દિવાભોજન નિંદા, અયોગ્ય વ્યક્તિ પાસે સેવા કરાવવી કે તેવાની સેવા કરવી, બાલ-મરણ વગેરેના પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૧૨

આમાં પ્રાણિવધ કે પ્રાણિમુક્તિ, પ્રત્યાખ્યાન - ભંગ, છ કાયિકની હિંસા, સદોષ-કાલાતિક્રમ - ક્ષેત્રાતિક્રમ આહારગ્રહણ, મહાનદી વારંવાર ઓળંગવી વગેરેના પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૧૩

આમાં અયોગ્ય સ્થાનમાં કાયોત્સર્ગ, અન્ય તીર્થિક કે ગૃહસ્થોના વિવિધ અનુચિત કાર્ય કરવાં, પાર્શ્વસ્થ વગેરેની વંદના-પ્રશંસા વગેરેના પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૧૪

આમાં પાત્રસંબંધી નિયમોના ભંગ બદલ કરવાના પ્રાયશ્ચિત્તો છે.

ઉદ્દેશક : ૧૫

આમાં ભિક્ષુ-ભિક્ષુણી સાથે અપ્રિય વચન અને વ્યવહાર, અન્ય દ્વારા શરીર સંસ્કાર, નિષિદ્ધ સ્થાનોમાં મળમૂત્ર ત્યાગ, નિષિદ્ધ વસ્ત્ર ગ્રહણ વગેરે માટે પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૧૬

આમાં નિવાસના નિયમોનો ભંગ કરવો, સચિત્ત શેરડી ભક્ષણ, સંયમી સાથે દુર્વ્યવહાર અને અસંયમી સાથે સદ્વ્યવહાર, નિષિદ્ધ સ્થાનો પર આહારગ્રહણ કે મળમૂત્ર ત્યાગ, જરૂરિયાત કરતાં વધારે સાધનો રાખવા વગેરેના પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૧૭

આમાં કુતૂહલાર્થ કાર્ય કરવાં, નિર્ગ્રંથ કે નિર્ગ્રંથીના પરસ્પર શરીરસંસ્કાર, આહાર-જળ સંબંધી નિયમોનો ભંગ, મનોરંજનાર્થ ગાયન, વાજિંત્ર વગેરેનું શ્રવણ જેવા દોષોના પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૧૮

આમાં નૌકા આરોહણ સંબધી તેમજ વસ્ત્રસંબંધી નિયમોના ભંગ કરવા બદલ પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૧૯

આમાં ખરીદેલી પ્રાસુક વસ્તુગ્રહણ, અધિક આહાર, ચાર સંધ્યામાં સ્વાધ્યાય, ચાર મહોત્સવો તેમજ ચાર પ્રતિપદાઓમાં સ્વાધ્યાય, શ્રુતસ્વાધ્યાય વિષયક નિયમોનો ભંગ વગેરે માટેના પ્રાયશ્ચિત્ત છે.

ઉદ્દેશક : ૨૦

આમાં નિષ્કપટ-સકપટ આલોચના નિમિત્તે કરવાના પ્રાયશ્ચિત્ત બતાવ્યાં છે.

सिरि उसहदेव सामिस्स णमो। सिरि गोडी - जिराउला - सव्वोदयपासणाहाणं णमो। नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स। सिरि गोयम - सोहम्माइ सव्व गणहराणं णमो। सिरि सुगुरु - देवाणं णमो। **卐卐卐 श्रीनिशीथसूत्रं- 卐卐卐** भाष्ये पीठिकागाथाः ४८६ प्रक्षिप्ताः १०' जे भिक्खू हत्थकम्मं करेइ करंतं वा साइज्जइ '५५१' ।१। जे भिक्खू अङ्गादाणं कट्ठेण वा कलिञ्चेण वा सलागाए वा संचालइ संचालंतं सा० '५८६' ।२। जे० संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा संबाहंतं वा पलिमद्दंतं वा सा० ।३। जे० तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा नवणीएण वा अब्भंगेज्ज वा मक्खेज्ज वा अब्भंगंतं मक्खंतं वा सा० ।४। जे० कक्केण वा लोद्धेण वा पउमचुण्णेण वा ण्हाणेण वा सिणाणेण वा चुण्णेहि वा वण्णेहि वा उव्वट्टेइ वा परिवट्टेइ वा उव्वट्टंतं वा परिवट्टंतं वा सा० ।५। जे० सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलंतं वा पधोवंतं वा सा० ।६। जे० निच्छल्लेइ वा निच्छल्लंतं वा सा० ।७। जे० जिग्घइ जिग्घंतं वा सा०'५९०' ।८। जे० अन्नयरंसि अचित्तंसि सोयंसि अणुपवेसेत्ता सुक्कपोग्गले निग्घायइ निग्घायंतं वा सा०'६०३' ।९। जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं गंधं जिग्घइ जिग्घंतं वा सा०'६०८' ।१०। जे भिक्खू पयमग्गं वा संकमं वा अवलंबणं वा '६१९' ।११। जे० दगवीणियं'६२९' ।१२। जे० सिक्कगं वा सिक्खगणंतगं वा '६४१' ।१३। जे० सोत्तियं वा रज्जुयं वा चिलिमिणिं वा '६५१' ।१४। जे० सूईए ।१५। पिप्पलगस्स ।१६। नहच्छेयणगस्स ।१७। कण्णसोहणगस्स उत्तरकरणं अम्नउत्थिएणं वा गारत्थिएण वा कारेइ कारंतं वा सा० '६६५' ।१८। जे० अण्णट्ठाए सूइं ।१९। पिप्पलगं ।२०। नहच्छेयणगं ।२१। कण्णसोहणगं जायइ जायंतं वा सा० '६५८ ।२२। जे भिक्खू अविहीए सूइं जाव जायइ जायंतं वा सा० '६६०' ।२३-२६। जे भिक्खू अप्पणो एगस्स अट्ठाए सूइं० जाइत्ता अन्नमन्नस्स अणुप्पदेइ अणुप्पदेंतं वा सा० ।२७-३० । जे भिक्खू पडिहारियं सूइं जाइत्ता 'वत्थं सिव्विस्सामि' त्ति पायं सिव्वइ सिव्वंतं वा सा० ।३१।० पिप्पलगं जाइत्ता 'वत्थं छिंदिस्सामि' त्ति पायं छिंदइ छिदंतं वा सा० ।३२।० नहच्छेयणगं जाइत्ता 'नहं छिंदिस्सामि' त्ति सल्लुद्धरणं करेइ करंतं वा सा० ।३३।० कण्णसोहणगं जाइत्ता 'कण्णमलं नीहरिस्सामि' त्ति दन्तमलं वा नहमलं वा नीहरइ नीहरंतं वा सा०'६६२' ।३४। जे भिक्खू अविहीए सूइं० पच्चप्पिणइ पच्चप्पिणंतं वा सा० '६७२' ।३५-३८। जे भिक्खू लाउपायं वा दारूपायं वा मट्टियापायं वा अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिघट्टावेइ वा संठवेइ वा जमावेइ वा अलमप्पणो करणयाए सुट्ठुमवि नो कप्पइ जायमाणे सरमाणे अन्नमन्नस्स वियरइ वियरंतं वा सा०'६८६' ।३९। जे० दण्डयं वा लट्ठियं वा अवलेहणियं वा वेणुसूइयं वा अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिघट्टावेइ सो चेव मग्गिल्लओ गमओ अणुगंतव्वो जाव (पायं तड्डेति) सा० '७०८' ।४०। जे० पायस्स एक्कं तुडियं तड्डेइ तड्डंतं वा सा०'७१४' ।४१।० पायस्स परं तिण्हं तुडियाणं तड्डेइ तड्डंतं वा सा० '७१९' ।४२। जे० पायं अविहीए बंधइ बंधंतं वा सा० '७२६' ।४३। जे० पायं एगेणं बंधेणं बंधइ बंधंतं वा सा०'७३१' ।४४।जे० पायं परं तिण्हं बंधाणं बंधइ बंधंतं वा सा०'७३६'।४५। जे० अइरेगबंधणं पायं दिवड्ढाओ मासाओ परेण धरेइ धरंतं वा सा०'७४५' ।४६।जे० वत्थस्स एगं पडियाणियं देइ देंतं वा सा० '७६२'।४७। जे० वत्थस्स परं तिण्हं पडियाणियाणं देइ देंतं वा सा०'७६७' ।४८। जे० अविहीए वत्थं सिव्वइ सिव्वंतं वा सा० '७७४'।४९। जे० वत्थे एगं फालियगण्ठियं करेइ करंतं वा सा० '७७७'।५०। जे० वत्थे परं तिण्हं फालियगण्ठियाणं करेइ करंतं वा सा०।५। जे० वत्थे एगं फालियं गण्ठेइ गंठंतं वा सा० ।५२। जे० वत्थे परं तिण्हं फालियाणं गंठेइ गंठंतं वा सा० ।५३। जे० वत्थं अविहीए गंठेइ गंठंतं वा सा०।'७७८'।५४। जे० वत्थं अतज्जाएणं गाहेइ गाहंतं वा सा० '७८१'।५५। जे० अइरेगगहियं वत्थं परं दिवड्ढाओ मासाओ धरेइ धरंतं वा सा०'७८७'।५६। जे० गिहधूमं अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा परिसाडावेइ परिसाडेंतं वा सा० '७९३'।५७। जे० पूइकम्मं भुंजइ भुंजतं वा साइज्जइ, तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं अणुवग्घाइयं '८०४।५८ **☆☆☆॥ पढमो उद्देसओ समत्तो ॥☆☆☆** जे भिक्खू दारूदंडगं पायपुंछणगं करेइ करंतं वा सा०'१८'।१। जे० गिण्हइ गिण्हंतं वा सा०।२।० धरेइ धरंतं वा सा०।३।० वियरइ वियरेंतं वा सा०।४०।० परिभाएइ परिभायंतं वा सा०।५।० परिभुञ्जइ परिभुंजंतं वा सा०'२१'।६। जे० परं दिवड्ढाओ मासाओ

सौजन्य :- प.पू. विदुषी साध्वीश्री चारुलताश्रीजी की प्रेरणाथी मुलुन्ड श्वे. मू. जैन संघ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धरेइ धरंतं वा सा०'२८'।७। जे० विसुयावेइ विसुयावेंतं वा सा० '३६'।८। जे भिक्खू अचित्तपइट्ठियं गंधं जिग्घइ जिग्घंतं वा सा० '३८'।९। जे० पयमग्गं वा संकमं वा अवलंबणं वा ।१०। जे० दगवीणियं ।११। सिक्कगं वा सिक्कगणंतगं वा ।१२। सोत्तियं वा रज्जुयं वा (चिलिमिणिं वा) करेइ करंतं वा सा० ।१३। जे० सूईए ।१४। पिप्पलगस्स ।१५। नहच्छेयणगस्स ।१६। कण्णसोहणगस्स उत्तरकरणं सयमेव करेइ करेंतं वा सा०'५६'।१७। जे भिक्खू लहुस्सगं फरूसं वयइ वयंतं वा सा०'७९'।१८। जे० मुसं वयइ वयतं वा सा० '९०'।१९। जे० अदत्तं आइयइ आइयंतं वा सा०'९९'।२०। जे भिक्खू लहुस्सएण सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा हत्थाणि वा पायाणि वा कण्णाणि वा अच्छीणि वा दन्ताणि वा नहाणि वा मुहं वा उच्छोलेज्ज वा पच्छोलेज्ज वा उच्छोलंतं वा पच्छोलंतं वा सा०'११७'।२१। जे० कसिणाइं चम्माइं धरेइ धरेंतं वा सा०'१५२'।२२।० कसिणाइं वत्थाइं '१७७'।२३।० अभिन्नाइं वत्थाइं ।२४।० लाउयपायं वा दारूपायं वा मट्टियापायं वा सयमेव परिघट्टइ वा संठवेइ वा जवेइ वा परिघट्टेंतं वा जाव जवेंतं वा सा०'१८०'।२५।० दंडगं वा लट्ठियं वा अवलेहणं वा वेणुसूइयं वा ।२६। जे० नियगगवेसियं पडिग्गहगं धरेइ धरेंतं वा सा०'१९४'।२७। जे० परगवेसियं ।२८।० वरगवेसियं ।२९।० बलगवेसियं '२०४'।३०।० लवगवेसियं '२१०'।३१। जे भिक्खू नितियं अग्गपिंडं भुंजइ भुंजतं वा सा०'२१९'।३२।० पिंडं ।३३।० अवड्ढं ।३४।० भागं ।३५।० उवड्ढभागं ।३६।० वासं वसइ वसंतं वा सा० २३६'।३७। जे भिक्खू पुरेसंथवं वा पच्छासंथवं वा करेइ करंतं वा सा०'२६५'।३८। जे० समाणे वा वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरेसंथुइयाणि वा पच्छासंथुइयाणि वा कुलाइं पुव्वामेव पच्छा वा भिक्खायरियाए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा०'१९१'।३९। जे भिक्खू अन्नउत्थिएण वा गारित्थएण वा परिहारिओ वा अपरिहारिएण सद्धिं गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए अणुपविसइ वा निक्खमइ वा अणुपविसंतं वा निक्खमंतं वा सा० '३०६' ।४०। जे० बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमंतं वा पविसंतं वा सा० '३१४' ।४१। जे० गामाणुगामं दूइज्जइ दूइज्जंतं वा सा० '३२२' ।४२। जे० भिक्खू अन्नयरं भोयणजायं पडिग्गाहेत्ता सुब्भिं सुब्भिं भुज्जइ० दुब्भिं दुब्भिं परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० ।४३। जे० अन्नयरं पाणगजायं पडिग्गाहेत्ता पुप्फगं पुप्फगं आइयइ० कसायं कसायं परिट्ठवइ परि० सा० '३३३' ।४४। जे० मणुन्नं भोयणजायं पडिग्गाहेत्ता बहुपरियावन्नं सिया अदूरे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया संता परिवसन्ति ते अणापुच्छित्ता अनिमंतिय परिट्ठवइ परिट्ठवंतं वा सा० '३४८' ।४५। जे० सागारियपिंडं गिण्हइ गिण्हंतं वा सा० ।४६। जे० भुंजइ भुंजंतं वा सा० '४१५' ।४७। जे० सागारियं कुलं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पुव्वामेव पिंडवायपडियाए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० '४२०' ।४८। जे० सागारियनिस्साए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा ओभासिय जायइ जायंतं वा सा० '४२७' ।४९। जे० उडुबद्धियं वा सेज्जासंथारगं परं पज्जोसवणाओ उवाइणावेइ उवायणावेंतं वा सा० '४५७' ।५०। जे० वासावासियं सेज्जासंथारगं परं दसरायकप्पाओ० '४९४' ।५१।० उडुबद्धियं वा वासावासियं वा सेज्जासंथारगं उवरिसिज्जमाणं पेहाए न ओसारेइ न ओसारंतं वा सा० '५००' ।५२। जे० पाडिहारियं सेज्जासंथारगं दोच्चंपि अणुन्नवेत्ता बाहिं नीणेइ नीणंतं वा सा० ।५३। जे० सागारियसंतियं ।५४। जे० पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा '५१३' ।५५। जे० पाडिहारियं सेज्जासंथारगं आयाए अपडिहट्टु संपव्वइ संपव्वयंतं वा सा० '५२३' ।५६। जे० सागारियसंतियं सेज्जासंथारगं आयाए अविगरणं कट्टु अणप्पिणित्ता संपव्वयइ संपव्वयंतं वा सा० '५२७' ।५७। जे० पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारगं विप्पणट्ठं न गवेसइ णगवेसंतं वा सा० '६००' ।५८। जे० इत्तिरियंपि उवहिं न पडिलेहेइ न पडिलेहंतं वा सा०, तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ।५९☆☆☆।। **बिइओ उद्देसओ २** ।।☆☆☆ जे भिक्खू आगंतागारेसु वा आरामागारेसु वा गाहावइकुलेसु वा परियावहेसु वा अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा असणं वा० ओभासइ ओभासंतं वा सा० ।१।० अन्नउत्थिया वा गारत्थिया वा० ।२।० अन्नउत्थिणिं वा गारत्थिणिं वा० ।३।० अन्नउत्थिणीओ वा गारत्थिणीओ वा० ।४। '११' जे० अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा कोऊहलपडियाए पडियागयं समाणं असणं वा० ओभासियं ओभासिय जायइ जायंतं वा सा०, एवं एतेणावि चत्तारि गमगा '२०' ।५-८। जे० अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा असणं वा० अभिहडं आहट्टु दिज्जमाणं पडिसेहेत्ता तमेव अणुवत्तिय २ परिवेढिय २ परिजविय २

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओभासिय २ जायइ जायंतं वा सा०, एवं एतेण चेव चत्तारि गमगा '२७' ।९-१२। जे० गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए पविट्ठे पडियाइक्खित्ते समाणे दोच्चं तमेव कुलं अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० '३३' ।१३। जे० संखडिपलोयणाए असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० '४५' ।१४। जे० गाहावइकुलं पिण्डवायपडियाए अणुपविट्ठे समाणे परं तिघरंतराओ असणं वा० अभिहडं आहट्टु दिज्जमाणं पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० '५३' ।१५। जे भिक्खू अप्पणो पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सा० '५७' ।१६। जे० संबाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा संबाहंतं वा पलिमद्दंतं वा सा० ।१७।० तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा नवणीएण वा मक्खेज्ज वा भिलिङ्गेज्ज वा ममक्खंतं वा भिलिंगंतं वा सा० ।१८।० लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा उल्लोलंतं वा उव्वट्टंतं वा सा० ।१९।० सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलंतं वा पधोयंतं वा सा० ।२०।० फुमेज्ज वा रएज्ज वा फुमंतं रयंतं वा सा० '६२' ।२१। जे भिक्खू अप्पणो कायं आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सा०, एतेणं अभिलावेणं सो चेव गमो भाणियव्वो जाव रयंतं वा सा० '६३' ।२२-२७। जे भिक्खू अप्पणो कायस्स वणेवि ते चेव '७२' ।२८-३३ ।जे भिक्खू अप्पणो कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदेज्ज वा विच्छिंदेज्ज वा अच्छिंदंतं वा विच्छिंदंतं वा सा० ।३४।० अच्छिंदित्ता वा विच्छिंदित्ता वा पूयं वा सोणियं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा णीहरंतं वा विसोहंतं वा सा० ।३५।० अच्छिं० विच्छिं० नीहरित्ता विसोहेत्ता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा पच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलंतं वा पधोवंतं वा सा० ।३६।० अच्छिं० पधोइत्ता अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिंपेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सा० ।३७।० अच्छिं० विलिंपित्ता तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा नवणीएण वा अब्भङ्गेज्ज वा मक्खेज्ज वा अब्भगंतं वा मक्खंतं वा सा० ।३८।० अच्छिं० मक्खेत्ता अन्नयरेण धूवणजाएण धूवेज्जवा पधूवेज्ज वा धूवंतं वा पधूवंतं वा सा० ।३९। जे भिक्खू अप्पणो पाउकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा अङ्गुलिए निवेसिय निवेसिय नीहरइ नीहरंतं वा सा० '७६' ।४०। जे० दीहाओ नहसिहाओ कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा कप्पंतं वा संठवंतं वा सा० ।४१।० दीहाई जङ्घरोमाइं ।४२।० वत्थि० ।४३।० चक्खु० ।४४।० कक्ख० ।४५।० मंसु० ।४६।० दन्ते आघंसेज्ज वा पघंसेज्ज वा आघसंतं वा पघसंतं वा सा० ।४७।० उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा उच्छोलंतं वा पधोयंतं वा सा० ।४८।० फुमेज्ज वा रएज्ज वा फुमंतं वा रयंतं वा सा० ।४९। उट्ठे आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा, एवं ओट्ठे पायगमो भाणियव्वो जाव फुमेज्ज वा रएज्ज वा ।५०-५५। जे० दीहाइं उत्तरोट्ठरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा कप्पंतं वा संठवंतं वा सा० ।५६।० अच्छिपत्ताइं ।५७।० अच्छीणि आमज्जेज्ज वा एवं अच्छीसु पायगमो भाणियव्वो जाव रएज्ज वा ।५८-६३।० दीहाइं भुमगरोमाइं ।६४।० पासरोमाइं कप्पेज्ज वा संठवेज्ज वा कप्पंतं वा संठवंतं वा सा० ।६५।० अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दन्तमलं वा नहमलं वा नीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा णीहरंतं वा विसोहंतं वा सा० ।६६।० कायाओ सेयं वा जल्लं वा पङ्कं वा मलं वा० ।६७। जे भिक्खू गामाणुगामं दुइज्जमाणे अप्पणो सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा० ।६८। जे० सणकप्पासओ वा उण्णक० वा पोण्डक० वा अमिलक० वा वसीकरणसोत्तियं करेइ करंतं वा सा० ।६९। जे० गिहंसि वा गिहमुहंसि वा गिहदुवारियंसि वा गिहपडिदुवारंसि वा गिहेलुयंसि वा गिहंगणंसि वा गिहवच्चंसि वा उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० ।७०।० मडगगिहंसि वा मडगच्छारियंसि वा मडगथूभियंसि वा मडगआसयंसि वा मडगलेणंसि वा मडगथण्डिलंसि वा मडगवच्चंसि वा० ।७१।० इङ्गालदाहंसि वा खारदाहंसि वा गायदाहंसि वा तुसदाहंसि वा ऊसदाहंसि वा० ।७२।० आययणंसि वा पंकंसि वा पणगंसि वा० ।७३। नवियासु वा गोलहणियासु नवियासु वा मट्टियाखाणीसु परिभुज्जमाणियासु वा अपरिभुज्जमाणियासु वा० ।७४।० उंबरवच्चंसि वा नग्गोहवच्चंसि वा आसत्थ० वा पिलंखु० वा डाग० वा० ।७५।० इक्खुवणंसि वा सालिवणंसि वा कुसुंभवणंसि वा कप्पासवणंसि० ।७६।० डागवच्चंसि वा साग० वा मूलय० वा कोत्थुंबरि० वा खार० वा जीरिय० वा दमणग० वा मरूग० वा० ।७७।० असोगवणंसि वा सत्तिवण्णवणंसि वा चंपगवणंसि वा चूयबणंसि वा अन्नयरेसु वा तहप्पगारेसु पत्तो वएसु पुप्फोवएसु फलोवएसु छाओवएसु० '१०६' ।७८।० सपायंसि वा परपायंसि वा दिया वा राओ वा वियाले वा उब्बाहिज्जमाणे सपायं गहाय परपायं वा जाइत्ता उच्चारपासवणं परिट्ठवेत्ता अणुग्गए सूरिये एडेइ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एडंतं वा वा० '११७' तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ।७९ ☆☆☆ ॥ **तइओ उद्देसओ ३॥** ☆☆☆ जे भिक्खू रायं अत्तीकरेइ अत्तीकरंतं वा सा०,० अच्चीकरेइ अच्चीकरंतं वा सा०, ० अत्थीकरेइ अत्थीकरंतं वा सा० '२८' ।१-३। एवं रायारक्खियं ।४-६। नगरारक्खियं ।७-९। निगमारक्खियं ।१०-१२। देसारक्खियं ।१३-१५।सव्वारक्खियं '२८' ।१६-१८।० कसिणाओ ओसहीओ आहारेइ आहारंतं वा सा० '३७' ।१९।० आयरियउवज्झाएहिं अविइन्नं विगइं आहारेइ आहारंतं वा सा० '६२' ।२०।० ठवणकुलाइं अजाणिय अपुच्छिय अगवेसिय पुव्वामेव पिण्डवायपडियाए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० '१०९' ।२१।० निग्गन्थीणं उवस्सयंसि अविहीए अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० '२२२' ।२२।० निग्गन्थीणं आगमणपहंसि दण्डगं वा लट्ठियं वा रयहरणं वा मुहपोत्तियं वा अन्नयरं वा उवगरणजायं ठवेइ ठवंतं वा सा० '२३३' ।२३।० नवाइं अणुप्पन्नाइं अहिगरणाइं उप्पाएइ उप्पायंतं वा सा० '२५३' ।२४।० पोराणाइं अहिगरणाइं खामियविउसमियाइं पुणो उदीरेइ उदीरंतं वा सा० '२५८' ।२५।० मुहविप्फालियं हसइ हसंतं वा सा० '२६३' ।२६।० पासत्थस्स संघाडयं देइ पडिच्छइ देन्तं वा पडिच्छंतं वा सा० ।२७-२८। एवं ओसन्नस्स ।२९-३०। कुसीलस्स ।३१-३२। नितियस्स ।३३-३४। संसत्तस्स '२८३' ।३५-३६।० उदउल्लेण वा ससिणिद्धेण वा हत्थेण वा दव्वीए वा भायणेण वा असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० ।३७। एवं एक्कवीसं हत्था भाणियव्वा (दशवै० ५ अ० ३२३३-३४-३५) ससरक्खेण वा मट्टियासंसट्ठेण वा ऊसासं० वा लोणियसं० वा हरियालसं० वा मणोसिलासं० वा वण्णियसं० वा गेरूयसं० वा सेडियसं० वा सोरट्ठियसं० वा हिङ्गुलगसं० वा अञ्जणसं० वा लोद्धसं० वा कुक्कुससं० वा पिट्ठसं० वा कंतवसं० वा कंदमूलसं० वा सिङ्गबेरसं० वा पुप्फगसं० वा उक्कुट्ठसं० वा हत्थेण वा० '२८९' ।३८।० गामारक्खियं अत्तीकरेइ अच्चीकरेइ अत्थीकरेइ करंतं वा सा० एवं सो चेव रायगमो णेयव्वो ।३९-४१।० देसारक्खियं० ।४२-४४।० सीमारक्खियं० ।४५-४७।० रण्णारक्खियं० ।४८-५०।० सव्वारक्खियं० '२९०' ।५१-५३।० अन्नमन्नस्स पाए एवं तइयउद्देसगमेण णेयव्वं जाव गामाणुगामं दुइज्जमाणो अन्नमन्नस्स सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा० '२९१' ।५४-१०६।० साणुप्पाए उच्चारपासवणभूमिं न पडिलेहेइ नपडिलेहंतं वा सा० '२९५' ।१०७।० तओ उच्चारपासवणभूमीओ न पडिलेहेइ नपडिलेहंतं वा सा० '२९९' ।१०८।० खुड्डागंसि थण्डिलंसि उच्चारपासवणं परिट्ठवइ परिट्ठवंतं वा सा० '३०४' ।१०९।० उच्चारपासवणं अविहीए परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० '३०७' ।११०।० उच्चारपासवणं परिट्ठवेत्ता न पुञ्छइ नपुञ्छंतं वा सा० ।१११।० कट्ठेण वा कलिञ्चेण वा अङ्गुलियाए वा सलागाए वा पुच्छइ पुच्छंतं वा सा० ।११२।० नायमइ नायमंतं वा सा० ।११३।० तत्थेव आयमइ आयमंतं वा सा० ।११४।० अतिदूरे आयमइ आयमंतं वा सा० ।११५। जे भिक्खू परं तिण्हं नावापूराणं आयमइ आयमंतं वा सा० '३१७' ।११६।० अपरिहारिए णं परिहारियं बुया-एहि अज्जो ! तुमं च अहं च एगओ असणं वा० पडिग्गाहेत्ता तओ पच्छा पत्तेयं पत्तेयं भोक्खामो वा पाहामो वा, जो तमेवं वयइ वयंतं वा सा०, तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं '३२९' ।११७ ☆☆☆ ॥ **चउत्थो उद्देसओ ४** ॥ ☆☆☆ जे भिक्खू सचित्तरूक्खमूलंसि ठिच्चा आलोएज्ज वा पलोएज्ज वा आलोयंतं वा पलोयंतं वा सा० ।१। जे० सचित्तरूक्खमूले ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ चेयंतं वा सा० ।२।० सचित्तरूक्खमूलंसि ठिच्चा असणं वा० आहारेइ आहारंतं वा सा० ।३।० उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० '२९' ।४।० (२३८) सज्झायं करेइ करेंतं वा सा० ।५।० उद्दिसइ उद्दिस्संतं वा सा० ।६।० समुद्दिसइ समुद्दिसंतं वा सा० ।७।० अणुजाणइ अणुजाणंतं वा सा० ।८।० वाएइ वायंतं वा सा० ।९।० पडिच्छइ पडिच्छंतं वा सा० ।१०।० परियट्टेइ परियट्टंतं वा सा० '३६' ।११। जे भिक्खू अप्पणो संघाडिं अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा सिव्वावेइ सिव्वावंतं वा सा० '४५' ।१२।० अप्पणो संघाडीए दीहसुत्ताइं करेइ करंतं वा सा० '५०' ।१३।० पिउमंदपलासयं वा पडोलप० वा बिल्लप० वा सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा संफाणिय संफाणिय आहारेइ आहारंतं वा सा० '५९' ।१४।० पडिहारियं पायपुच्छणयं जाइत्ता तामेव रयणिए पच्चप्पिणिइस्सामित्ति सुए पच्चप्पिणइ पच्चप्पिणंतं वा सा० ।१५।० पडिहारियं पायपुच्छणयं जाइत्ता सुए पच्चप्पिणइस्सामित्ति तमेव रयणिं पच्चप्पिणइ पच्चप्पिणंतं वा सा० ।१६। एवं सागारियसंतिएवि जे पायपुच्छणयं जाइत्ता दो आलावग्गा ।१७-१८।० पाडिहारियं दण्डयं वा लट्ठियं वा अवलेहणिज्जं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा वेलुसूइं वा एवं एतेहिं दोहिं चेव पाडिहारियं सागारियं गमएहिं णेयव्वा ।१९.२२।० पाडिहारियं सेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता दोच्चंपि अणणुन्नविय अहिट्ठेइं अहिट्ठंतं वा सा० '८१'।२३। एवं सागारियसंतिएवि ।२४ जे० पाडिहारियं वा सागारियसंतियं वा सेज्जासंथारयं अप्पच्चप्पिणित्ता अणुण्णविय अहिट्ठेइ अहिट्ठंतं वा सा०।२५।० सणकप्पासाओ वा पोण्डक० वा उण्णक० वा अमिलक० वा दीहसुत्ताइं करेइ करंतं वा सा० '११२'।२६।० सचित्ताइं करेइ धरेइ परिभुंजइ करंतं० वा सा० ।२७-२९। एवं चित्ताइं ।३०-३२। विचित्ताणि दारूदण्डाणि वा वेलुदण्डाणि वा वेत्तदं० वा करेइ करंतं वा सा० एवं धरेइ धरंतं वा सा० परिभुंजइ परिभुजंतं वा सा० '१२०' ।३३-३५। जे० नवगनिवेसंसि गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा अणुपविसित्ता असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० ।३६।० नवगनिवेसंसि अयागरंसि वा तंबागरंसि वा तउआ० वा सीसआ० हिरण्णआ० वा सुवण्णआ० वा रयण० वा वइरआ० वा अणुप्पविसित्ता० '१२९' ।३७। जे० मुहवीणियं करेइ करंतं वा सा० ।३८।० दन्तवी० ।३९। एवं उट्ठवी० ।४०।। नासावी० ।४१। कक्खवी० ।४२। हत्थवी० ।४३। नहवी० ।४४। पत्तवी० ।४५। पुप्फवी० ।४६। फलवी० ।४७। बींयवी०।४८। हरियवी० ।४९। मुहवीणियं जाव हरियवी० वाएइ वायंतं वा सा० अण्णतराणि वा तहापगाराइं अणुदिन्नाइं सद्दाइं उदीरेइ उदीरंतं वा सा० '१३२'।५०-६१।० उद्देसियं सेज्जं अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० ।६२।० सपाहुडियं ।६३।० सपरिकम्मं ।६४। जे० 'नत्थि संभोगवत्तिया किरिय' त्ति वयइ वयंतं वा सा० '२७५' ।६५।० वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुच्छणं वा अलं थिरं धुवं धरणिज्जं पलिच्छिंदिय पलिच्छिंदिय परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० ।६६।० लाउयपायं वा दारूपायं वा मट्टियापा० वा० ६७।० दण्डगं वा जाव पिप्पलसूइगं वा पलिभज्जिय परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० '२८१'।६८।० अइरेगपमाणं रयहरणसीसाइं धरेइ धरंतं वा सा० ।६९।० सुहुमाइं रयहरणसीसाइं करेइ करंतं वा सा० ।७०।० रयहरणस्स एक्कं बंधं देइ देंतं वा सा० ।७१।० रयहरणस्स परं तिण्हं बंधाणं देइ देंतं वा सा०।७२। जे० रयहरणं अविहीए बंधइ बंधंतं वा सा० ।७३।० कण्डुसगबंधेण बंधइ बंधंतं वा सा० ।७४।० वोसट्ठं धरेइ धरंतं वा सा० ।७५।० अनिसट्ठं धरेइ धरंतं वा सा० ।७६।० अभिक्खणं अभिक्खणं अहिट्ठेइ अहिट्ठंतं वा सा० ।७७।० उस्सीसमूले ठवइ ठवंतं वा सा० ।७८।० तुड्डेइ तुड्डंतं वा सा०, तं सेवमाणे आवज्जइ मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं '३११' ।७९☆☆☆ **॥ पञ्चमो उद्देसो ५॥** ☆☆☆ जे भिक्खू माउग्गामं मेहुणवडियाए विन्नवेइ वा विण्णवंतं वा सा० '५१' ।१। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए हत्थकम्मं करेइ करतं वा सा० ।२।० अंगादाणं कट्ठेणं वा कलिंचेण वा अंगुलियाए वा संचालेइ संचालंतं वा सा०, एवं माउग्गामऽभिलावेण पढमुद्देसाइगमो णेयव्वो जाव सोयसुयं, जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अन्नयरंसि अचित्तंसि सोयंसि अणुप्पविसित्ता सुक्कपोग्गले निग्घाएइ निग्घायंतं वा सा० ।३-१०। जे० माउग्गामं मेहुणवडियाए सयं कुज्जा सयं बूया करंतं वा० सा० ।११। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए कलहं कुज्जा कलहं बूया कलहवडियाए गच्छइ गच्छंतं वा सा० ।१२।० लेहं लिहइ लेहं लिहावेइ लेहवडियाए गच्छइ गच्छंतं वा सा० '६९' ।१३।० पिट्ठंतं वा सोयंतं वा पोसंतं वा भल्लायएणं उप्पाएइ उप्पायंतं वा सा० ।१४।० पिट्ठंतं वा सोयंतं वा पोसंतं वा भल्लायएण उप्पाएत्ता सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा० ।१५।० पिट्ठंतं वा सोयंतं वा पोसंतं वा भल्लायएण उप्पाएत्ता तेल्लेण वा एवं जहा तइए उद्देसए गंडादीण जो गमो सो चेव इहंपि णेयव्वो जाव अण्णयरेणं आले वणजाएणं आलिंपेज्ज वा विलिपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिंपंतं वा सा० ।१६। एवं जाव धूवेज्ज वा पधूवेज्ज वा ।१७-१८।० कसिणाइं वत्थाइं धरेइ धरंतं वा सा० ।१९। एवं अहयाइं ।२०।० धोवमलिणाइं ।२१।० चित्ताइं ।२२।० विचित्ताइं ।२३।० अप्पणो पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सा० एवं तइयउद्देसे जो गमओ सो चेव इह मेहुणवडियाए णेयव्वो जाव जे माउग्गामस्स मेहुणवडियाए गामाणुगामं दूइज्जमाणे अप्पणो सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा० ।२४-७६।० खीरं वा दहिं वा नवणीयं वा गुलं वा खण्डं वा सक्करं वा मच्छण्डियं वा अन्नयरं वा पणीयं आहारं आहारेइ आहारंतं वा साइज्जइ '८८' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ☆☆☆ ।७७॥ **छट्ठो उद्देसओ ६॥**☆☆☆ जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए तणमालियं वा मुअ० वा भेण्ड० वा मयण० वा पिंछ० वा दन्त० वा सिंग० वा संख० वा हड्ड० वा कट्ठ० वा पत्त० वा पुप्फ० वा फल० वा बीय० वा हरियामालियं वा करेइ करंतं वा सा० धरेइ धरंतं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा सा० पिणिंधइ पिणिंधंतं वा सा० ।१-३।० अयलोहाणि वा तंब० वा तउय० वा सीसग० वा रूप्पग० वा सुवण्णलोहाणि वा करेइ करंतं वा सा० धरेइ धरंतं वा सा० परिभुञ्जइ परिभुञ्जंतं वा सा० ।४-६।० हाराणि वा अद्धहाराणि वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा कणगावलिं वा रयणावलिं वा कडगाणि वा तुडियाणि वा केऊराणि वा कुंडलाणि वा पट्टाणि वा मउडाणि वा पलंबसुत्ताणि सुवण्णसुत्ताणि वा करेइ करंतं वा सा० धरेइ धरंतं वा सा० परिभुञ्जइ परिभुञ्जंतं वा सा० ।७-९।० आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंबलाणि वा कंबलपा० कोयरा (वा) णि वा कोयर (व) पा० वा कालमियाणि वा नीलमि० सामाणि वा महासामाणि वा उद्दाणि वा उद्दलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवङ्गाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणाणि वा खोमाणि वा दुगुल्लाणि वा पट्टणाणि वा आवरन्ताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणगकन्ताणि वा कणगखंसि (खइ) याणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा करेइ जाव परिभुंजइ परिभुंजंतं वा सा० ।१०-१२। जे० माउग्गामं मेहुणवडियाए अक्खंसि वा ऊरूंसि वा उयरंसि वा थणंसि वा गहाय संचालइ संचालंतं वा सा०। १३। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अन्नमन्नस्स पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सा०, एवं ततियउ द्देसगमओ णेयव्वो जाव जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए गामाणुगामं दुइज्जमाणे अन्नमन्नस्स सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा० ।१४-६६। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अणंतरहियाए एवं ससिणिद्धाए ससरक्खाए मट्टियाकडाए चित्तमन्ताए पुढवीए निसीयावेज्ज वा तुयट्टावेज्ज वा णिसीयावेंतं वा तुयट्टावेंतं वा सा० ।६७-७१।० चित्तमन्ताए सिलाए लेलुए० ।७२-७३।० कोलावासंसि वा दारूए जीवपइट्ठिए संअण्डे सपाणे सवीए सहरिए सओस्से सउदए सउत्तिङ्गपणगदगमट्टियमक्कडगसंताणगंसि० ।७४।० आगन्तारेसु वा जाव परियावसहेसु वा० ।।७५।० आगन्तागारेसु वा जाव परियावसहेसु वा निसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा असणं वा० अणुघासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा अणुघासंतं वा अणुपायंतं वा सा० ।७६।० अंकंसि वा पलियंकंसि वा णिसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा जाव साइज्जइ ।७७। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अंकंसि वा पलियंकंसि वा णिसीयावेत्ता वा तुयट्टावेत्ता वा असणं वा० अणुघासेज्ज वा अणुपाएज्ज वा अणुघासंतं वा अणुपायंतं वा सा० ।७८। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अण्णयरं तेइच्छं आउट्टेइ आउट्टेंतं वा सा० ।७९।० अमणुन्नाइं पोग्गलाइं नीहरइ नीहरंतं वा सा० ।८०।० मणुन्नाइं पोग्गलाइं उवहरइ उवहरंतं वा सा० ।८१। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए अन्नयरं पसुजाइं वा पक्खिजाइं वा पायंसि वा पक्खंसि वा पुच्छंसि वा सीसंसि वा गहाय संचालेइ संचालंत वा सा० ।८२।० सोयंसि कट्ठं वा किलिंचं वा अंगुलीयं वा सलागं वा अणुप्पवेसेत्ता संचालेइ संचालंतं वा सा० ।८३।० 'अयं थी' तिकट्टु आलिङ्गेज्ज वा परिस्सएज्ज वा परिचुंबेज्ज वा आलिंगंतं वा परिस्सयंतं वा परिचुंबंतं वा सा० ।८४। जे० माउग्गामस्स मेहुणवडियाए असणं वा० देइ देन्तं वा सा० ।८५-८६। एवं वत्थंपि दोहिं गमएहिं ।८७-८८। सज्झायंपि दोहिं ।८९-९०।० अन्नयरेणं इंदिएणं आगारं करेइ करंतं वा सा० '५३' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ☆☆☆ ।९१।। **सत्तमो उद्देसओ ७।।**

☆☆☆ जे भिक्खू आगन्तारेसु वा जाव परियावसहेसु वा एगो एगित्थीए सद्धिं जाव कहंतं वा साइज्जइ '८४' ।१।० उज्जाणंसि वा उज्जाणगिहंसि वा उज्जाणसालंसि वा निज्जाणंसि वा निज्जाणगिहंसि वा निज्जाणसालंसि वा० ।२।० अट्टंसि वा अट्टालयंसि वा पागारंसि वा चरियंसि वा दारंसि वा गोपुरंसि वा एगो० ।३।० दगंसि वा दगमग्गंसि वा दगपहंसि वा दगतीरंसि वा दगठाणंसि वा एगो० ।४।० सुन्नगिहंसि वा सुन्नसालंसि वा भिन्नगिहंसि वा भिन्नसालंसि वा कूडागारंसि वा कोट्ठागारंसि वा एगो० ।५।० तणगिहंसि वा तणसालंसि वा तुसगिहंसि वा तुससालंसि वा बुसगिहंसि वा बुससालंसि वा एगो० ।६।० जाणसालंसि वा जालगिहंसि वा जुग्गसालंसि वा जुग्गगिहंसि वा एगो० ।७।० पणियसालंसि वा पणियगिहंसि वा परियायगिहंसि वा परियायसालंसि वा कुवियगिहंसि वा कुवियसालंसि वा एगो० ।८।० गोणसालंसि वा गोणगिहंसि वा महाकुलंसि वा महागिहंसि वा एगो एगित्थीए सद्धिं विहारं वा करेइ सज्झायं वा करेइ असणं वा० आहारेइ उच्चारं वा पासवणं वा परिट्ठवेइ अन्नयरं वा अणारियं निट्ठुरं अस्समणपाओग्गं कहं कहेइ कहंतं वा सा० '८७' ।९।० राओ वा वियाले वा इत्थीमज्झगए इत्थीसंसत्ते इत्थीपरिवुडे अपरिमाणाए कहं कहेइ कहंतं वा सा० ।१०।० सगणिच्चियाए वा परगणिच्चियाए वा निग्गन्थीए सद्धिं गामाणुगामं दुइज्जमाणे पुरओ गच्छमाणे पिट्ठओ रीयमाणे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओहयमणसंकप्पे चिंतासोयसागरसंपविट्ठे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए विहारं करेइ जाव करंतं वा सा० ।११।० नायगं वा अनायगं वा उवासयं वा अणुवासयं वा अन्तो उवस्सयस्स अद्धं वा राइं कसिणं वा राइं संवसावेइ संवसावंतं वा सा० ।१२। जे० तं न पडियाइक्खइनपडियाइक्खंतं वा सा० ।१३। जो तं पडुच्च निक्खमइ वा पविसइ वा० '१३६'।१४। जे भिक्खू रन्नो खत्तियाणं मुदियाणं मुद्धाभिसित्ताणं समवाएसु वा पिण्डमहेसु वा असणं वा० पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेंतं वा सा० ।१५।० उत्तरसालंसि वा उत्तरगिहंसि वा रीयमाणाणं० ।१६।० हयसालगयाण वा गयसा० वा मंतसा० वा गुज्झसा० वा रहस्ससा० वा मेहुणसा० वा० ।१७।० संनिहिसंनिचयाओ खीरं वा दहिं वा नवणीयं वा सप्पिं वा गुलं वा खण्डं वा सक्करं वा मच्छण्डियं वा अन्नयरं वा भोयणजायं पडिगाहेइ पडिगाहेंतं वा सा० ।१८।० उस्सट्ठपिंडं वा संसट्ठपिण्डं वा अनाहपिण्डं वा किविणपिण्डं वा वणीमगपिण्डं वा पडिगाहेइ जाव साइज्जइ '१५५' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ☆☆☆।१९।। **अट्ठमो उद्देसओ ८।।** ☆☆☆ जे भिक्खू रायपिण्डं गेण्हइ गेण्हंतं वा सा० ।१।० भुंजइ भुंजंतं वा सा० '१६' ।२।० रायन्तेपुरं पविसइ पविसंतं वा सा० ।३।० रायन्तेपुरियं वएज्जा 'आउसो ! रायंतेउरिए ! नो खलु अम्हं कप्पइ रायन्तेपुरं निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा, इमण्हं तुमं पडिग्गहगं गहाय रायन्तेपुराओ असणं वा० निहडियं आहट्टु दलयाहिं जे तं एवं वयइ वयंतं वा सा० ।४। जे भिक्खू य णं रायन्तेउरिया वएज्जा 'आउसन्तो ! समणा नो खलु तुज्झं कप्पइ रायन्तेपुरं निक्खमित्तए वा पविसित्तए वा आहारेयं पडिग्गहगं जाए अहं रायन्तेपुराओ असणं वा० णीहडियं आहट्टु दलयामि' जे एवं पडिसुणेइ पडिसुणंतं वा सा० '२९' ।५। जे भिक्खू रन्नो जाव मुद्धाभिसित्ताणं दुवारियभत्तं वा पसुभत्तं वा भयगभत्तं वा बलभत्तं वा कयगभत्तं वा हयभत्तं वा गयभत्तं वा कन्तारभत्तं वा दुब्भिक्खभत्तं वा दुकालभत्तं वा दमगभत्तं वा गिलाणभत्तं वा वद्दलियाभत्तं वा पाहुणगभत्तं वा पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० '३६' ।६। जे भिक्खू रण्णो खत्तियाण जाव मुद्धाभिसित्ताणं इमाइं छद्दोसाययणाइं अजाणित्ता अपुच्छिय अगवेसिय परं चउरायपञ्चरायाओ पिण्डवायपडियाए निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमन्तं वा पविसन्तं वा साइज्जइ तं०-कोट्ठागारसालाणि वा भण्डागारसालाणि वा पाणसालाणि वा खीरसा० वा गञसा० वा महाणससा० वा० '४२' ।७। जे भिक्खू रण्णो जाव मुद्धाभिसित्ताणं अइगच्छमाणाण वा निग्गच्छमाणाण वा० '४८' ।८।० इत्थीओ सव्वालंकारविभूसियाओ पदमवि चक्खुदंसणपडियाए गच्छइ वा अभिसंधारेइ वा गच्छन्तं वा अभिसंधारेन्तं वा सा० ।९।० मंसखायाण वा मच्छखा० वा छविखा० बहिया निग्गयाणं असणं वा जाव साइज्जइ ।१०।० अन्नयरं उववूंहणीयं समीहियं पेहाए तीसे परिसाए अणुट्ठियाए अभिन्नाए अव्वोच्छिन्नाए जे तं अन्नं पडिगाहेइ पडिगाहेन्तं वा साइज्जइ, अह पुण एवं जाणेज्जा 'इहऽज्ज राया खत्तिए परिवुसिए' जे भिक्खू ताए गिहाए ताए पएसाए ताए उवासन्तराए वा विहारं वा करेइ सज्झायं वा जाव कहंतं वा सा० '६१' ।११। जे भिक्खू रण्णो खत्तियाणं जाव अभिसित्ताणं बहियाजत्तासंठियाणं असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० ।१२। बहियाजत्तापडिणियत्ताणं० ।१३। एवं नईजत्तापट्ठियाणं० ।१४।० पडिणियत्ताणं० ।१५।० गिरिजत्तापट्ठियाणं० ।१६।० गिरिजत्तापडिणियत्ताणं० ।१७।० महाभिसेयंसि वट्टमाणंसि निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमंतं वा पविसंतं वा सा० '९०' ।१८। जे भिक्खू जाव अभिसित्ताणं इमाओ दस आभिसेक्काओ रायहाणीओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वञ्जियाओ अंतो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा निक्खमइ वा पविसइ वा निक्खमन्तं वा पविसन्तं वा साइज्जइ तंजहा-चम्पा महुरा वाणारसी सावत्थी साएयं कंपिल्लं कोसंबी मिहिला हत्थिणापुरं रायगिहं '१००' ।१९। जे भिक्खू रन्नो० असणं वा० परस्स नीहडं पडिगाहेइ पडिगाहेन्तं वा साइज्जइ तं०-खत्तियाण वा राईण वा कुराईण वा रायसंसियाण वा रायपेसियाण वा० ।२०।० नडाण वा नट्टाण वा कच्छुयाण वा जल्लाण वा मल्लाण वा मुट्ठियाण वा बेलम्बगाण वा कहगाण वा पवगाण वा लासगाण वा दोक्खलयाण वा छत्ताणुयाण वा० ।२१।० आसपोसयाण वा हत्थिपो० वा महिसपो० वा वसहपो० वा सीहपो० वा वग्घपो० वा अयपो० वा पोयपो० वा मिगपो० वा सुणहपो० वा सूयरपो० वा मेण्ढपो० वा कुक्कुडपो० वा तित्तिरपो० वा वट्टयपो० वा लावयपो० वा चीरल्लपो० वा हंसपो० वा मयूरपो० वा सुयपो० वा० ।२२। एवं आसदमगाण

Jain Education International 2010-03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा हत्थिद० वा० ।२३।० आसमिंठाण वा हत्थिमि० वा० ।२४।० आसरोहाण वा हत्थिरो० वा० ।२५।० सत्थाहाण वा संवाहावयाण वा अब्भंगावयाण वा उव्वट्टावयाण वा मज्जावयाण वा मण्डावयाण वा छत्तग्गहाण वा चामर० वा हडप्प० वा परियट्ट० वा दीविय० असि० वा धणु० वा सत्ति० कोन्त० वा० ।२६।० वरिसधराण वा कञ्चुइज्जाण वा दोवारियाण वा दण्डारक्खियाण वा० ।२७।० खुज्जाण वा चिलाइयाण वा वामणीण वा बडभीण वा बब्बरीण वा पउसीण वा जोणियाण वा पल्हवियाण वा इसिणीण वा थारूगिणीण वा लउसीण वा लासीण वा सिंहलीण वा आलवी (रबी) ण वा पुलिन्दीण वा सबरीण वा पारिसीण वा०, तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं '१११' ।२८☆☆☆ **॥ नवमो उद्देसओ ९॥**☆☆☆ जे भिक्खू भदन्तं आगाढं वयइ वयंतं वा सा० ।१।० फरूसं ।२।० आगाढफरूसं '३५' ।३।० अन्नयरीए अच्चासायणाए अच्चासाएइ अच्चासायंतं वा सा० '५२' ।४। जे भिक्खू अणन्तकायसंजुत्तं आहारं आहारेइ आहारेंतं वा सा० '५६' ।५।० आहाकम्मं भुञ्जइ भुञ्जंतं वा सा० '८१' ।६।० पडुप्पन्नं वागरेइ वागरेंतं वा सा० ।७।० अणागयं निमित्तं वागरेइ वागरंतं वा सा० '९३' ।८।० सेहं विप्परिणामेइ विपरिणामंतं वा सा० ।९।० अवहरइ अवहरंतं वा सा० ।१०।० दिसं विपरिणामेइ विप्परिणामंतं वा सा० ।११।० अक्खरइ अवहरंतं वा सा० '१५७' ।१२।० बहियावासियं आएसं परं तिरायाओ अविफालेत्ता संवसावेइ संवसावेंतं वा सा० ।१३।० साहिगरणं अविओसवियपाहुडं अकडपायच्छित्तं संभुञ्जइ संभुंजंतं वा सा० '२५३' ।१४।० उग्घाइयं अणुग्घाइयं वयइ वयंतं वा सा० ।१५।० अणुग्घाइयं उग्घाइयं० ।१६।० उग्घाइए अणुग्घाइयं देइ देंतं वा सा० ।१७।० अणुग्घाइए उग्घाइयं० ।१८। जे भिक्खू उग्घाइयं सोच्चा नच्चा संभुञ्जइ संभुंजंतं वा सा० ।१९।० उग्घाइयहेउं० ।२०।० उग्घाइयसंकप्पं० ।२१। उग्घाइयं वा उग्घाइयहेउं वा उग्घाइयसंकप्पं वा० ।२२।० अणुग्घाइयं० अणुग्घाइयहेउं० अणुग्घाइयसंकप्पं० अणुग्घाइयं वा अणुग्घाइयहेउं वा अणुग्घाइयसंकप्पं वा० ।२३-२६।० उग्घाइयं वा अणुग्घाइयं वा० ।२७।० उग्घाइयहेउं वा अणुग्घाइंयहेउं वा० ।२८।० उग्घाइयसंकप्पं वा अणुग्घाइयसंकप्पं वा० ।२९।० उग्घाइयं वा अणुग्घाइयं वा उग्घाइयहेउं वा अणुग्घाइयहेउं वा उग्घाइयसंकप्पं वा अणुग्घाइयसंकप्पं वा० ।३०। जे भिक्खू उग्गयवित्तीए अणत्थमियमणसंकप्पे संथडिए निव्विइगिच्छासमावन्नेणं अप्पाणेणं असणं वा० पडिगाहेत्ता संभुञ्जइ संभुञ्जन्तं वा सा० ।३१।० संथ० विइगिच्छा० ।३२।० असंथडिए निव्विइगिच्छा० ।३३।० असं० विइगिच्छा० (अह पुण एवं जाणेज्जा-अणुग्गए सूरिए अत्थमिए वा, से जं च मुहे जं च पाणिंसि जं च पडिग्गहे तं विगिञ्चिय विसोहिय तं परिट्ठवेमाणे नाइक्कमइ, जो तं भुंजइ भुंजंतं वा साइज्जइ) '३२५' ।३४। जे भिक्खू राओ वा वियाले वा सपाणं सभोयणं उग्गालं उग्गिलित्ता पच्चोगिलइ पच्चोगिलंतं वा सा० '३५६' ।३५। जे भिक्खू गिलाणं सोच्चा न गवेसइ नगवेसंतं वा सा० ।३६।० उम्मग्गं वा पडिपहं वा गच्छइ गच्छंतं वा सा० ।३७। जे भिक्खू गिलाणवेयावच्चे अब्भुट्ठियस्स सएण लाभेण असंथरमाणस्स जे तस्स न पडितप्पइ नपडितप्पेंतं वा सा० ।३८।० गि० अब्भुट्ठियं गिलाणपाओगे दव्वजाए अलभमाणे जे तं न पडियाइक्खइ नपडियाइक्खंतं वा सा० '५१२' ।३९।० पढमपाउसंसि गामाणुगामं दूइज्जइ दूइज्जंतं वा सा० ।४०।० वासावासं पज्जोसवियंसि दूइज्जइ दूइज्जंतं वा सा० ।४१।० अपज्जोसवणाए पज्जोसवेइ पज्जोसवेंतं वा सा० ।४२।० पज्जोसवणाए न पज्जोसवेइ नपज्जोसवंतं वा सा० ।४३।० पज्जोसवणाए गोलोमाइंपि वालाइं उवाइणावेइ उवाइणावेंतं वा सा० ।४४।० पज्जोसवणाए इत्तिरियंपि आहारं आहारेइ आहारेंतं वा सा० ।४५।० अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा पज्जोसवेइ पज्जोसवेंतं वा सा० '६१०' ।४६।० पढमसमोसरणुद्देसपत्ताइं चीवराइं पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० '६६४' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ☆☆☆।४७॥ **दसमो उद्देसओ १०॥** ☆☆☆ जे भिक्खू अयपायाणि वा कंस० वा तंब० वा तउय० वा रूप्प० वा सुवण्ण० वा जायरूव० वा मणि० वा काय० कणग० वा दन्त० वा सिंग० वा चम्म० वा चेल० वा अंकपा० वा संख० वा वइर० वा करेइ करंतं वा सा० ।१।० धरेइ धरंतं वा सा० ।२।० परिभुंजइ परिभुंजन्तं वा सा० ।३।० अयबंधणाणि वा जाव वइरबंधणाणि वा करेइ करेंतं वा सा० जाव परिभुंजइ परिभुंजंतं वा सा० ॥४-६।० परं अद्धजोयणमेराओ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पायवडियाए गच्छइ गच्छंतं वा सा० ।७।० परं अद्धजोयणमेराओ सपच्चवायंसि पायं अभिहडं आहट्टु देज्जमाणं पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० '२३' ।८।० धम्मस्स अवण्णं वयइ वयंतं वा सा० ।९।० अधम्मस्स वण्णं० '३६' ।१०।० अन्नउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा पाए आमज्जिज्ज वा पमाज्जिज्ज वा आमज्जंतं वा पमज्जंतं वा सा० एवं तइयउद्देसगमेण णेयव्वं नवरं अन्नउत्थियगारत्थियाभिलावा जाव जे गामाणुगामं दूइज्जमाणे अण्णउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा सीसदुवारियं करेइ करंतं वा सा० '३८' ।११-६३।० अप्पाणं बीभावेइ बीभावंतं वा सा० ।६४।० परं० ।६५।० अप्पाणं विम्हावेइ विम्हावेंतं वा सा० ।६६।० परं० ।६७।० अप्पाणं विप्परियासेइ विप्परियासेंतं सा० ।६८।० परं० ।६९।० मुहवण्णं करेइ करंतं वा सा० '८४ ।७०।० वेरज्जविरूद्धरज्जंसि सज्जं गमणं आगमणं गमणागमणं करेइ जाव सा० '११५' ।७१।० दियाभोयणस्स अवण्णं वयइ वयंतं वा सा० ।७२।० राइभोयणस्स वण्णं० '१२०' ।७३।० दिया असणं वा० पडिगाहेत्ता दिया भुंजइ० ।७४।० दिया प० रत्तिं भु० ।७५।० रत्तिं प० दिया भु० ।७६।० रत्तिं पडिगाहेइ रत्तिं भुंजइ भुंजतं वा सा० '१९१' ।७७।० असणं वा० अणागाढे परिवासेइ परिवासंतं वा सा० ।७८।० परिवासियस्स असणस्स वा० तयप्पमाणं वा भूइ० वा आहारं आहारेइ आहारंतं वा सा० '२०२' ।७९।० मंसाइयं वा मच्छाइयं वा मंसखलं वा मच्छखलं वा आहेणं वा पहेणं वा सम्मेलं वा हिंगोलं वा अन्नयरं वा तहप्पगारं विरूवरूवं हीरमाणं पेहाए ताए आसाए ताए पिवासाए तं रयणिं अन्नत्थ उवाइणावेइ उवातिणावेंतं वा सा० '२१२ ।८०।० निवेयणपिण्डं भुंजइ भुंजंतं वा सा० '२१५' ।८१।० अहाछन्दं पसंसइ पसंसतं वा सा० ।८२।० वंदइ वंदतं वा सा० '२२६' ।८३।० नायगं वा अनायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा अणलं वा पव्वावेइ पव्वावेंतं वा सा० ।८४।० उवट्ठावेइ उवट्ठावंतं वा सा० '४९१' ।८५।० नायएण वा अनायएण वा उवासएण वा अणुवासएण वा अणलेण वेयावच्चं कारेइ कारंतं वा सा० '४९६' ।८६।० सचेले सचेलगाणं मज्झे संवसइ संवसंतं वा सा० ।८७।० अचेले सचेलगाणं० ।८८।० सचेले अचेलगाणं० ।८९।० अचेले अ० '५०७' ।९०।० पारियासियं पिप्पलिं वा पिप्पलिचुण्णं वा सिंगबेरं वा सिंगबेरचुण्णं वा बिलं वा लोणं वा उब्भिं (ब्भि) य वा लोणं आहारेइ आहारंतं वा सा० '५२०' ।९१।० गिरिपडणाणि वा मरूप० वा भिगुप० वा तरूप० वा गिरिपक्खंदणाणि वा मरू० वा तरू० जलपवेसाणि वा जलण० वा (२३९) जलपक्खंदणाणि वा जलण० वा विसभक्खणाणि वा सत्थोवाडणाणि वा अंतोसल्लमरणाणि वा वेहाणसाणि वा गिद्धपट्ठाणि वा वलयमरणाणि वा जाव अन्नयराणि व तहप्पगाराणि बालमरणाणि पसंसइ पसंसंत वा सा० '५३७' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं ।९२।। **एक्कारसमो उद्देसओ ११।।** जे भिक्खू कोलूणपडियाए अन्नयरिं तसपाणजाइं तणपासएण वा मुंजपा० वा कट्ठपा० वा चम्मपा० वा वत्तपा० वा रज्जुपा० सुत्तपा० वा बंधइ बंधतं वा सा० ।१।० बद्धेल्लगं वा मुयइ मुयंतं वा सा० '१०' ।२।० अभिक्खणं अभिक्खणं पच्चक्खाणं भअइ भंजंतं वा सा० '१५' ।३।० परित्तकायसंजुत्तं आहारेइ आहारंतं वा सा० '२०' ।४।० सलोमाइं चम्माइं धरेइ धरंतं वा सा० '४५' ।५।०तणपीढगं वा पलालपी० वा छगणपी० वा कट्ठपी० वा परवत्थेणोच्छन्नं अहिट्ठेइ अहिट्ठंतं वा सा० '५०' ।६।० निग्गन्थीए संघाडिं अन्नउत्थिएण गारत्थिएण वा सिव्वावेइ सिव्वावंतं वा सा० '५७' ।७।० पुढवीकायस्स वा कलमायमवि समारभइ समारभंतं वा सा० एवं जाव वणप्फतिकायस्स '६१' ।८।० सचित्तरूक्खं दुरूहइ दुरूहंतं वा सा० '६६' ।९।० गिहिमत्ते भुअइ भुंजंतं वा सा० ।१०।० गिहिवत्थं परिहेइ परिहंतं वा सा० ।११।० गिहिनिसेज्जं वाहेइ वाहंतं वा सा० ।१२।० गिहितिगिच्छं करेइ करंतं वा सा० '८२' ।१३।० पुरेकम्मकडेण हत्थेण वा मत्तेण वा दव्विएण वा भायणेण वा असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा० ।१४।० अन्नउत्थियाण वा गारत्थियाण वा सीओदगपरिभोएण० '१४२' ।१५।० कट्ठकम्माणि वा चित्तक० वा पोत्थक० वा दन्तक० वा मणिक० वा सेलक० वा गंठिमाणि वा वेढिमाणि वा पूरिमाणि वा संघाइमाणि वा पत्तच्छेज्जाणि वा विविहाणि वा वेहिमाणि वा चक्खुदंसणवडियाए अभिसंधारेइ अभिसंधारंतं वा सा० ।१६।० वप्पाणि वा फलिहाणि वा उप्फलाणि वा पल्ललाणि वा उज्झराणि वा निज्झराणि वा वावीणि वा पोक्खराणि वा दीहियाणि वा गुंजालियाणि वा सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपं० वा० ।१७।० कच्छाणि वा गहणाणि वा नूमाणि वा वणाणि वा वणविदुग्गाणि वा पव्वयाणि वा पव्वयवि० वा० ।१८।० गामाणि वा नगराणि वा खेडाणि वा कब्बडाणि वा मडम्बाणि वा दोणमुहाणि वा पट्टणाणि वा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगराणि वा सम्बाहाणि वा संनिवेसाणि वा० ।१९।० गाममहाणि वा जाव संनिवेसमहाणि वा० ।२०।० गामवहाणि वा जाव संनिवेसवहाणि वा गामदाहाणि वा जाव संनिवेसदाहाणि वा० ।२१।० गामपहाणि वा जाव संनिवेसपहाणि वा० ।२२।० आसकरणाणि वा हत्थिक०वा उट्टक० वा गोणक० वा महिसक० वा सूयरक० वा० ।२३।० आसजुद्धाणि वा हत्थिजु० वा उट्टजु० वा गोण० महिसजु० वा० ।२४।० उज्जूहियट्ठाणाणि वा हयजूहियट्ठाणाणि वा गयजूहियट्ठाणाणि वा० ।२५।० अभिसेयट्ठाणाणि वा अक्खाइयट्ठाणाणि वा माणुम्माणियट्ठा० वा महयाहयनट्टगीयबाइयतन्तीतलतालतुडियपडुप्पवाइय० वा० ।२६।० आघायणाणि वा डिम्बाणि वा डमराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुद्धाणि वा महासंगामाणि वा कलहाणि वा बोलाणि वा० ।२७।० विरूवरूवेसु महुस्सवेसु इत्थीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा मज्झिमाणि वा डहराणि वा अणलंकियाणि वा सुअलंकियाणि वा गायन्ताणि वा वायन्ताणि वा नच्चन्ताणि वा हसन्ताणि वा रमन्ताणि वा मोहन्ताणि वा विउलं असणं वा० परिभायन्ताणि वा परिभुंजन्ताणि वा० सा० ।२८।० इहलोइएसु वा रूवेसुं परलोइएसु वा रूवेसुं दिट्ठेसु वा अदिट्ठेसु वा सुएसु वा असुएसु वा विन्नाएसु वा अविन्नाएसु वा रूवेसु सज्जइ रज्जइ गिज्झइ अज्झोववज्जइ सज्जमाणं वा जाव अज्झोववज्जमाणं वा सा० '१६३' ।२९।० पढमाए पोरिसीए असणं वा० पडिगाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेइ उवाइणावंतं वा सा० '१८९' ।३०।० परं अद्धजोयणमेराओ असणं वा० उवाइणावेइ उवायणावेंतं वा सा० '२१८' ।३१।० दिया गोमयं पडिगाहेत्ता दिया कायंसि वणं आलिम्पेज्ज वा विलिंपेज्ज वा आलिंपंतं वा विलिपंतं वा सा० ।३२।० दिया गो० प० रत्तिं वणं आलि० विलिंपेज्ज वा ।३३।० रत्तिं गो० प० दिया वणं आ० वि० ।३४। रत्तिं गो० प० रत्तिं वणं आ० वि० ।३५।० दिया आलेवणजायं पडिगाहेत्ता दिया कायंसि वणं जाव चउभंगो '२२६' ।३६-३९।० अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उवहिं वहावेइ वहावेंतं वा सा० ।४०।० तंनीसाए असणं ० देइ देंतं वा सा० '२३०' ।४१। जे भिक्खू पश्चिमाओ महण्णवाओ महानईओ उद्दिट्ठाओ गणियाओ वंजियाओ अन्तो मासस्स दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरइ वा संतरइ वा उत्तरन्तं वा संतरन्तं वा साइज्जइ, तंजहा-गंगा जउणा सरऊ एरावई मही '२७८' तं सेबमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ☆☆☆ ।४२।। **बारसमो उद्देसओ १२।।** ☆☆☆ जे भिक्खू अणन्तरहियाए पुढवीए ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेएइ चेयंतं वा सा० जाव मक्कडासंताणगंसि ।१-८।० थूणंसि वा गिहेलुयंसि वा उसुयालंसि वा कामजालंसि वा० ।९।० कुलियंसि वा भित्तिंसि वा सिलंसि वा लेलुयंसि वा अन्तलिक्खजायंसि वा० ।१०।० खंधंसि वा फलहंसि वा मञ्चंसि वा मण्डवंसि वा मालंसि वा पासायंसि वा दुब्बद्धे दुण्णिक्खित्ते अनिकम्पे चलाचले० '२२' ।११। जे भिक्खू अन्नउत्थिय वा गारत्थियं वा सिप्पं वा सिलोगं वा अट्ठापयं वा कक्कडगं वा वुग्गहं वा सलाहं (गं) वा सलाहकढहत्थयं वा सिक्खावेइ सिक्खावेंतं वा सा० ।१२।० आगाढं वयइ वयंतं वा सा० फरूसं आगाढफरूसं अन्नयरीए अच्चासायणाए अच्चासाएइ अच्चा० सा० '३१' ।१३-१६। जे भिक्खू अन्नउत्थियाण वा गारत्थियाण वा कोउगकम्मं करेइ करंतं वा सा० ।१७।० भूइकम्मं० ।१८।० पसिणं कहेइ० ।१९। पसिणापसिणं०।२०।० तीयं निमित्तं० ।२१।० लक्खणं० ।२२।० सुमिणं० ।२३।० विज्जं पउंजइ पउंजंतं वा सा०'५०' ।२४। एवं मन्तं ।२५। जोगं ।२६।० नट्ठाणं मूढाणं विप्परियासियाणं मग्गं वा पवेएइ संधिं वा प० मग्गेण वा संधिं प० संधीओ बा मग्गं प० पवेएंतं वा सा० ।२७।० धाउं पवेएइ पवेएंतं वा सा० ।२८।० निहिं० '६२' ।२९। जे भिक्खू मत्तए अप्पाणं देहइ देहंतं वा सा० ।३०।० अद्दाए० ।३१। एवं असीए ।३२। मणिए ।३३। उड्डपाणे ।३४। तेल्ले ।३५। फा (पा) णिए ।३६। वसाए '७३' ।३७।० वमणं पडिकम्मं करेइ करंतं वा सा० ।३८।० विरेयणं०।३९।० वमणविरेयणं० ।४०।० अरोगियं० '८४' ।४१।० पासत्थं वंदइ वंदंतं वा सा० पसंसइ पसंसंतं वा सा '११९' ।४२-४३। एवं ओसन्नं ।४४-४५। कुसीलं ।४६-४७। नितियं ।४८-४९। संसत्तं ।५०-५१। काहियं ।५२-५३। पासणियं ।५४-५५। मामगं ।५६=५७। संपसारगं '११९' ।५८-५९।० धाइपिंडं भुंजइ भुंजंतं वा सा० ।६०। एवं दूइ० ।६१। निमित्त० ।६२। आजीवियं० ।६३। वणीमगपि० ।६४। तिगिच्छा० ।६५। कोह० ।६६। माण० ।६७। माया० ।६८। लोभ० ।६९। विज्जा० ।७०। मन्त० ।७१। जोग० ।७२। चुण्ण० ।७३।० अन्तद्धाण० '२१६' तं सेवमाणे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं। ☆☆☆ ७४॥ **तेरसमो उद्देसओ १३॥** ☆☆☆ जे भिक्खू पडिग्गहं किणइ किणावेइ कीयं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडि० सा० ।१।० पामिच्चेइ पामिच्चावेइ पामिच्चियं० ।२।० परियट्टेइ परियट्टावेइ परियट्टियं० ।३।० अच्छेज्जं अनिसिट्ठं अभिहडं० '५१' ।४। जे भिक्खू अइरेगं पडिग्गहगं गणिं उद्दिसियं गणिं समुद्दिसिय तं गणिं अणापुच्छिय अणामन्तिय अन्नमन्नस्स वियरइ वियरंतं वा सा० ।५।० खुड्डगस्स वा खुडिडयाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा अहत्थच्छिन्नस्स अपायच्छिन्नस्स अनासच्छिन्नस्स अकण्णच्छिन्नस्स अणोट्ठच्छिन्नस्स सक्कस्स देइ देंतं वा सा० ।६।० खुड्डगस्स वा जाव थेरियाए वा हत्थच्छिन्नस्स० ओट्ठच्छिन्नस्स असक्कस्स न देइ नदेंतं वा सा० '१५३' ।७। जे भिक्खू पडिग्गहं अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं धरेइ धरेंतं वा सा० ।८।० अलं थिरं धुवं धारणिज्जं न धरेइ नधरेंतं वा सा० '१५९' ।९। जे भिक्खू वण्णमन्तं पडिग्गहं विवण्णं करेइ करेंतं वा सा० ।१०। विवण्णं पडिग्गहं वण्णमन्तं० ।११। जे भिक्खू नो नवए मे पडिग्गहे लद्धे' त्तिकट्टु तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिलिंगेज्ज वा मक्खंतं वा भिलिंगंतं वा सा० ।१२।० लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण व उल्लोलेज्ज वा उव्वले (ट्टे) ज्ज वा उल्लोलंतं वा उव्वलं (ट्ट) तं वा सा० ।१३।० सीओदगवियडेण वा जाव उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलेज्ज वा पधोएज्ज वा० ।१४।० बहुदेवसिएण तेल्लेण वा० लोद्धेण वा० सीओदगवियडेण जाव सा० ।१५-१७। जे णवए मे पडिग्गहे इतिकट्टु एवं दो गमा भाणियव्वा ॥ जे० सुब्भिगंधे पडिग्गहे लद्धे इतिकट्टु० बहुदेवसिएण सीओदगवियडेण वा जाव सा० ।१८-२३। जे नो नवए सुब्भिगंधेणवि दो चेव गमा ॥ जे दुब्भिगंधे पडिग्गहगे लद्धेत्ति० दुब्भिगंधेण दो चेव गमा णेयव्वा '१७४' ।२४-२९। जे भिक्खू अणन्तरहियाए पुढवीए जाव जीवपतिट्ठिते सअंडे जाव ससंकमणंसि चलाचले सपडिग्गहगं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा आया० पयावंतं वा सा० ।३०-४०। एवं जे० कुलियंसि वा जाव लेलुयंसि वा सपडिग्गहगं आया० पया० साइ० ।४१। जे० खंधंसि जाव पासायंसि वा अन्नयरंसि वा अंतरिक्खजायंसि सपडि० '१७९' ।४२।० पडिग्गहाओ पुढवीकायं आउकायं तेउकायं नीहरइ नीहरावेइ नीहरियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहंतं वा सा० ।४३।० कंदाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा० ।४४।० ओसहिबीयाइं० ।४५।० तसपाणजायं० '१९५' ।४६। जे भिक्खू पडिग्गहगं णिक्कोरेइ णिक्कोरावेइ णिक्कोरियं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिगाहंतं वा सा० '२००' ।४७। जे भिक्खू नायगं वा अनायगं वा उवासगं वा अणुवासगं वा गामन्तरंसि वा गामपहन्तरंसि वा पडिग्गहगं ओभासिय २ जायइ जायंतं वा सा० ।४८।० अणुवासगं वा परिसामज्झाओ उट्ठवेत्ता० '२१३' ।४९। जे भिक्खू पडिग्गहगनीसाए उडुबद्धं वसइ वसंतं वा सा० ।५०।० वासावासं० '२१७' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्गाइयं ☆☆☆ ॥५१॥ **चउद्दसमो उद्देसओ १४॥** ☆☆☆ जे भिक्खू भिक्खूणं आगाढं वयइ वयंतं वा सा० ।१। एवं फरूसं० ।२। आगाढफरूसं० ।३।० अन्नयरीए अच्चासायणाए अच्चासाएइ '२ ।४। जे भिक्खू सचित्तं अम्बं भुञ्जइ भुंजंतं वा सा० ।५।० विडसइ विडसंतं वा सा० ।६।० सचित्तं अम्बं वा अम्बपेसिं वा अम्बभित्तं वा अम्बसालगं वा अम्बडालगं वा अम्बचोयगं वा भुञ्जइ भुंजंतं वा सा० ।७।० विडसइ विडसंतं वा सा० ।८।० सचित्तपइट्ठियं अम्बं भुञ्जइ०, एवं सचित्तपतिट्ठिएणवि चत्तारि आलावगा णेयव्वा '२५८' ।९-१२। जे भिक्खु अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो पाए आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा आ० प० सा० एवं तइयउद्देसगमओ णेयव्वो जाव सीसदुवारियं. जे गामाणुगामं दुइज्जमाणे अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो सीसदुवारियं कारवेइ कार० सा० ।१३-६५। जे भिक्खु आगन्तारेसु वा जाव महागिहंसि वा उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० '२६८' ।६६-७४। जे भिक्खु अन्नउत्थियस्स वा गारत्थियस्स वा असणं वा० देइ देंतं वा सा० ।७५।० पडिच्छइ पडिच्छंतं वा सा० ।७६।० वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुञ्छणं वा देइ देंतं वा सा० ।७७।० पडिच्छइ पडिच्छंतं वा सा० ।७८। जे भिक्खू पासत्थस्स असणं वा० देइ देंतं वा सा० पडिच्छति पडि० सा०, वत्थं वा जाव पायपुञ्छणं वा देति देंतं वा सा० वत्थं वा पडिच्छइ प० सा० ।७९-८२। एवं ओसन्नस्स ।८३-८६। कुसीलस्स ।८७-९०। नितियस्स ।९१-९४। संसत्तस्स '३०४' ।९५-९८। जे भिक्खू जायणावत्थं वा निमन्तणावत्थं वा अजाणिय अपुच्छियं अगवेसिय पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेन्तं वा साइज्जइ, से य वत्थे चउण्हं अन्नयरे सिया तंजहा-निच्चनियंसणिए मज्जणिए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छणुस्सविए रायदुवारिए '३९४' ।९९। जे भिक्खू विभूसापडियाए अप्पणो पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा आ० प० साति०. एवं तइयउद्देसगमेण जाव जे गामाणुगामं दूइज्जमाणे विभूसापडियाए अप्पणो पाए आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा० सा० ।१००-१५२।० वत्थं वा पडिग्गहं वा कंम्बलं वा पायपुञ्छणं वा अन्नयरं वा उवगरणजायं धरेइ धरंतं वा सा० ।१५३।० धोवइ धोवंतं वा सा० '३९८' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ।१५४ ☆☆☆॥

पण्णरसमो उद्देसओ १५॥☆☆☆ जे भिक्खू सागारियं सेज्जं उवागच्छइ उ० सा० '१३३' ।१।० सउदगं सेज्जं अणुपविसइ अणुपविसंतं वा सा० '२५६' ।२।० सागणियं से० '२९३' ।३।० सचित्तं उच्छुं भुंजइ एवं पन्नरसमे उद्देसे अंबस्स जहा गमो सो चेव इहंपि णेयव्वो ।४।० विडसइ० ।५।० सचित्तं अन्तरूच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा भुंजइ० ।६।० विडसइ० ।७।० सचित्तपइट्ठियं उच्छुं भुंजइ०, विडसइ०, अंतरूच्छुयं० '२९६' ।८-११।० आरण्णगाणं वणंवयाणं अडवीजत्तासंपट्ठियाणं असणं वा० पडिगाहेइ पडि० सा० '३०३'।१२।० वुसराइयं अवुसराइयं वयइ वयंतं वा सा०।१३।० अवसु० वसु० '४७७'।१४।० वुसराइयाओ गणाओ अवुसराइयं गणं संकमइ संकमंतं वा सा०।१५।० वुग्गहवक्कंताणं असणं वा० देइ देंतं वा सा०।१६।० पडिच्छइ पडिच्छंतं वा सा०।१७।० एवं वत्थं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पायपुञ्छणं वा देइ देंतं वा सां०।१८।० पडिच्छइ पडि० सा०।१९। एवं वसहिवि दोहिं गमएहिं, देइ०।२०। पडिच्छइ०।२१।० अणुपविसइ०।२२।० सज्झायं देइ देंतं वा सा०।२३।० सज्झायं पडिच्छइ पडि० सा० '४९६'।२४।० विहं (अडविं) अणेगाहगमंणिज्जं अभिसंधारेइ अभि० सा० '५८४'।२५।० विरूवरूवाइं दस्सुगायायणाइं अणारियाइं मिलक्खूइं पच्चिन्तियाइं सति लाढे विहाराए संथरमाणेसु संथरणिज्जेसु जणवएसु विहारपडियाए अभि० '६१६'।२६।० दुगुञ्छियकुलेसु असणं वा० पडिगाहेइ पडिगाहंतं वा सा०।२७।० वत्थं वा पडिग्गहं वा कम्बलं वा पायपुञ्छणं वा०।२८।० वसहिं०।२९।० सज्झायं उद्दिसइ उद्दिसंतं वा सा०।३०।० वाएइ वा० वा सा०।३१।० पडिच्छइ पपडि० वा सा०।३२।० असणं वा० पुढवीए निक्खिवइ नि० वा सा०।३३।० संथारए०।३४।० वेहासे० '३२८'।३५।० अन्नउत्थीहिं वा गारत्थीहिं वा सद्धिं भुंजइ भुंजंतं वा सा०।३६।० आवेढियपरिवेढिए भुंजइ भु० वा सा० '६३८'।३७।० आयरियउवज्झायाणं सेज्जासंथारगं पाएणं संघट्टेत्ता हत्थेण अणणुन्नवेत्ता धारयमाणे गच्छइ गच्छंतं वा सा० '६४२।३८।० पमाणइरित्तं वा गणणाइरित्तं वा उवहिं धरेइ धरंतं वा सा० '७४७'।३९।० अनन्तरहियाए पुढवीए चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ परिट्ठवंतं वा सा० (जाव खंधंसि०) '७४९' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ।४०-५०☆☆☆॥ **सोलसमो उद्देसओ ।१६॥☆☆☆** जे भिक्खू कोऊलहल्लपडियाए अन्नयरं तसपाणजायं तणपासएण वा जाव सुत्तपासएण वा बंधइ बंधतं वा सा०।१।० बद्धेल्लगं वा मुयइ मुयंतं वा सा०।२।० तणमालियं वा जाव हरियमालियं वा पिणद्धइ० करेइ करेंतं वा सा० धरेइ ध० वा० '८'।३-५।० अयलोहाणि वा जाव सुवण्णलोहाणि वा करेइ करेंतं वा सा० धरेइ धरंतं वा सा० '१०'।६-८।० हाराणि वा जाव सुवण्णसुत्ताणि वा क० ध० परिभुञ्जइ प० सा० '११'।९-११।० आइणाणि वा जाव आभरणविचित्ताणि वा करेस करेंतं वा सा० धरेइ ध० सा० परिभुंजइप० सा० '१४'।१२-१४। जा निग्गन्थी निग्गन्थस्स पाए अन्नउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आमज्जावेज्ज वा एवं ततिओद्देसगमेण णेयव्वं जाव जा निग्गत्थी निग्गन्थस्स गामाणुगामं दुइज्जमाणस्स अन्न० गार० सीसदुवारियं कारवेइ०।१५-६७। जे निग्गन्थे निग्गन्थीए पाए अन्नउत्थिणीए वा गारत्थिणीए वा आमज्जिज्ज वा जाव सा० एवं मग्गिल्लगमयसरिसं णेयव्वं जाव निग्गन्थीए गामाणुगामं दूइज्जमाणीए अन्न० गा० सीसदुवारियं कारवेइ० '२८'।६८-१२०। जे निग्गन्थे निग्गन्थस्स सरिसगस्स सन्ते ओवासे अन्ते आवासं न देइ नदेंतं वा सा०।१२१। जा निग्गन्थी निग्गन्थीए सरिसियाए जाव साइज्जइ '४६'।१२२। जे भिक्खू मालोहडं असणं वा० देज्जमाणं पडिग्गाहेइ प० सा०।१२३।० कोट्ठाउत्तं असणं वा० उक्कुज्जिय निकुज्जिय०।१२४।० मट्टिओलित्तं असणं वा० उब्भिंदिय निब्भिंदिय० '५५'।१२५। जे भिक्खू असणं वा० अन्नयरं पुढवीपइट्ठियं पडिग्गाहेइ०।१२६। एवं आउप०।१२७। तेउप०।१२८। वणस्सइकायप० '६२'।१२९। जे भिक्खू अच्चसिणं असणं वा० सुप्पेण

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा विहुणेण वा तालियण्टेण वा पत्तेणं वा पत्तभङ्गेण वा साहाए वा साहाभङ्गेण वा पेहूणेण वा पेहूणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा फुमित्ता वा वीइत्ता वा आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ प० सा०।१३०।० असणं वा० उसिणुसिणं पडिगाहेइ प० सा०।१३१।० उस्सेयणं वा संसेयणं वा चाउलोदगं वा वारोदगं वा तिलोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा भुसोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा अम्बकञ्जियं वा सुद्धवियडं वा अहुणाधोयं अणंबिलं अपरिणयं अवक्कन्तजीवं अविद्धत्थं पडिग्गाहेइ प० सा० '७४'।१३२।० अप्पणो आयरियत्ताए लक्खणाइं वागरेइ वागरंतं वा सा० '८४'।१३३।० गाएज्ज वा वाएज्ज वा नच्चेज्ज वा अभिणएज्ज वा हयहेसियं हत्थिगुलगुलाइयं उक्कुट्ठसीहनायं वा करेइ करंतं वा सा०।१३४।० भेरीसद्दाणि वा पडह० वा मुख० वा मुइंग० वा एवं नंदि० वा झल्लरि० वा वल्लरि० वा डमरूग० वा मड्डय० वा सद्दुय० वा पएस० वा गोलुइ० वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वितयाणि सद्दाणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेइ अ० सा० बारसमउद्देसगमेण णेयव्वं ।१३५।० वीणासद्दाणि वा विपञ्चि० वा तूण० वा वव्वीसग० वा वीणाइय० तुंबवीणा० वा झो (पों) इय० वा ढंकुणस० वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वितयाणि सद्दाणि०।१३६।० तालसद्दाणि वा कंसताल० वा लत्तिय० वा गोहिय० वा मकरिय० वा कच्छभि० वा महइ० वा सणालिया० वा वा वालिया० वा अन्नयराणि सा तहप्पगाराणि झसिराणि०।१३७।० संखसद्दाणि वा वंस० वा वेणु० वा खरमुहि० वा परिलि० वा वेच्चा० वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि झसिराणि० '९३'।१३८।० वप्पाणि वा फलिहाणि वा जाव इह (पर) लोइएसु वा सद्देसु जाव अज्झोववज्जेमाणं वा सा० '९४' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ।१३९-१५१☆☆☆ **॥ सत्तरसमो उद्देसओ ।१७॥**☆☆☆ जे भिक्खू अणट्ठाए नावं दुरूहइ दुरू० सा०।१।० नावं किणइ किणावेइ कीयमाहट्टु दिज्जमाणं दुरूहइ दुरूहंतं वा सा० एवं जो चोद्दसमे उद्देसे परिग्गहगमो सो णेयव्वो जाव अच्छेज्जं, णवरं दुरूहतित्ति भणियव्वं।२-५।० थलाओ नावं जले ओकसावेइ ओ० सा०।६।० जलाओ नावं थले उक्कसावेस उक्क० सा०।७।० पुण्णं नावं उस्सिञ्चइ उ० सा०।८।० सन्नं नावं उप्पिलावेइ उप्पि० सा०।९।० पडिणावियं कट्टु नावाए दुरूहइ दु० सा०।१०।० उड्ढगामिणिं वा नावं अहोगामिणिं वा नावं दुरूहइ दु० सा०।११।० जोयणवेलागामिणिं वा अद्धजोयणवेलागा० वा नावं दु० दु० सा०।१२।० नावं आकसावेइ ओकसावेइ खेवावेइ रज्जुणा वा कड्ढइ०।१३।० नावं आलित्तएण वा पप्फिएण वा वंसेण वा वलेण वा वाहेइ वा० वा०।१४।० नावाओ उदगं भायणेण वा पडिग्गहेण वा मत्तेण वा नावाउस्सिञ्चणेण वा उस्सिञ्चइ उ० सा०।१५।० नावं उत्तिंगेण उदगं आसवमणिं उवरूवरिं कज्जलमाणिं पेहाय हत्थेण वा पाएण वा आसत्थपत्तेण वा कुसपत्तेण वा मट्टियाए चेलकण्णेण वा पडिपीहेइ प० सा०।१६।० नावागओ तावागयस्स असणं वा० पडिगाहेइ प० सा० '३०' एतेण गमेण णावागओ जलगतस्स णावागतो पंकगयस्स णावागतो थलगतस्स, एवं जलगएणवि चत्तारि पंकगएणवि चत्तारि थलगएणवि चक्षारि गमा णेयव्वा।१७-३२।० वत्थं किणइ किणावेइ कीयमांहट्टू दिज्जमाणं पडिग्गाहइ प० सा-, एवं चोद्दसमे उद्देसे पडिग्गहए जो गमो भणिओ सो चेव इहंपि वत्थेण णेयव्वो जाव वासावासं संवसइ संव० सा० नवरं णिक्कोरणं नत्थि '३१' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ।३३-८८☆☆☆ **॥ अट्ठादसमो उद्देसओ ।१८॥** ☆☆☆ जे भिक्खू वियडं किणइ किणावेइ कीयं आहट्टु देज्जमाणं पडिग्गाहेइ प० सा०।१। एवं पामिच्चेति पामिच्चावेति पामिच्चियमिति०।२।० परिवट्टति परियट्टावेति परियट्टियमिति०।३।० अच्छेज्जं अनिसट्ठं अभिहडं०।४। जे भिक्खू गिलाणस्सऽट्ठाए परं तिण्हं वियडदत्तीणं पडिग्गाहेइ प० सा०।५।० वियडं गहाय गामाणुगामं दुइज्जइ दू० सा०।६।० वियडं गालेइ गालावेइ गालियं० '२६'।७।० चउहिं संझाहिं सज्झायं करेइ करेंतं वा सा० तं०-पुव्वाए संझाए पच्छिमाए संझाए अवर (मज्झ) ण्हे अड्ढरत्ते ।८।० कालियसुयस्स परं तिण्हं पुच्छाणं पुच्छइ पु० सा०।९।० दिट्ठिवायस्स परं सत्तण्हं पुच्छाणं पुच्छ पु० सा० '३६'।१०।० चउसु महामहेसु सज्झायं करेइ करेंतं वा सा० तं-इन्दमहे खंदमहे जक्खमहे भूयमहे ।११। चउसु महापाडिवएसु सज्झायं करेइ करेंतं वा सा० तं०- सुगिम्हियापाडिवए आसाढीपा० भद्दवय (इन्दमह) पा० कत्तियपा०।१२।० पोरिसिं सज्झायं उवाइणावेइ उवा० सा०।१३।०

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

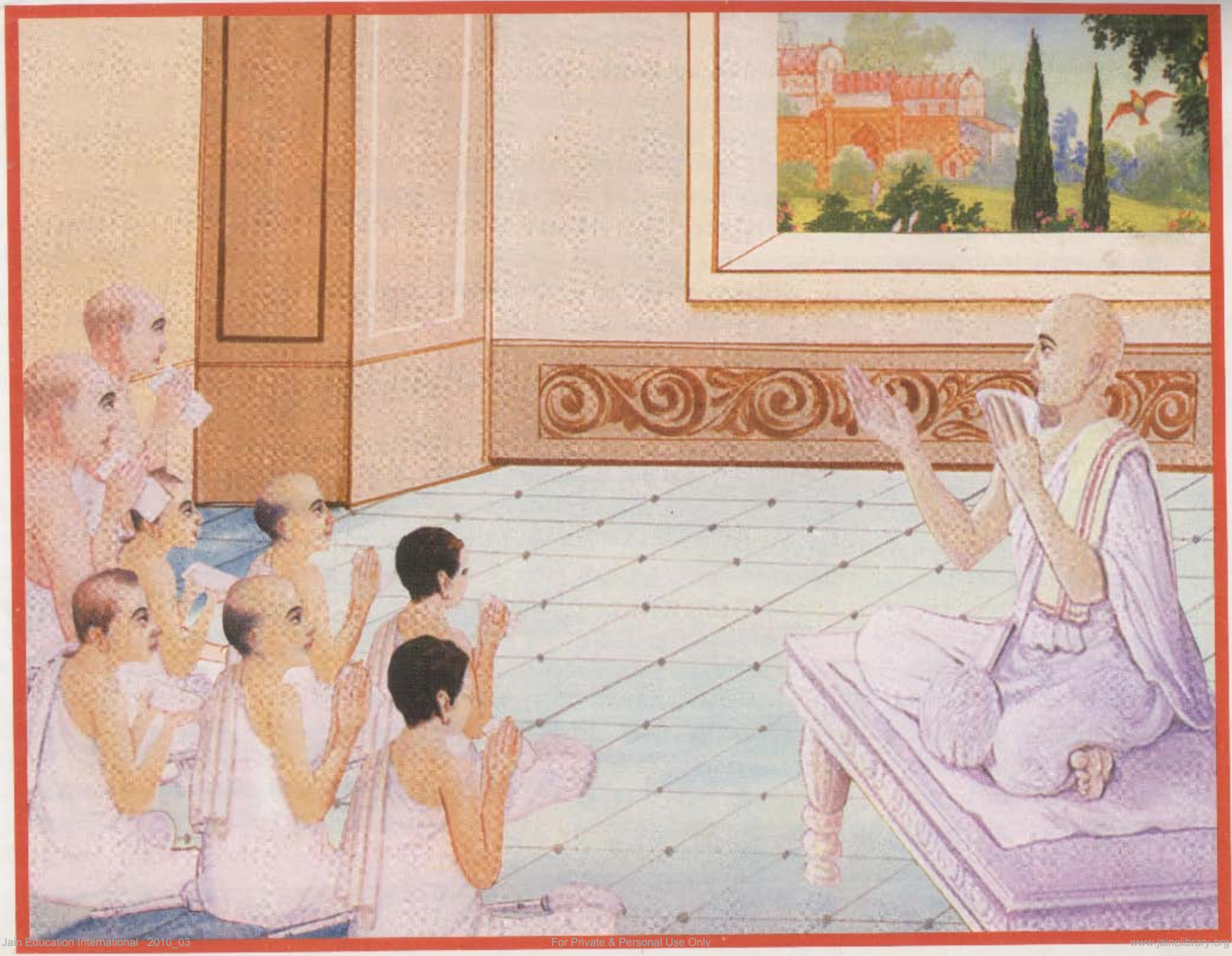

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

છ છેદ સૂત્ર :

ગુરુ શિષ્યને પ્રાયશ્ચિત આપી રહ્યા છે.

छह छेद सूत्र :

गुरु शिष्य को प्रायश्चित दे रहे हैं।

Six Cheda-Sūtras :

A Preceptor Instructing expiatory rites to a disciple.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चाउक्कालं सज्झायं करेइ नक० सा० '४६'।१४।० असज्झाइए सज्झायं करेइ क० सा०।१५।० अप्पणो असज्झाइए सज्झायं करेइ क० सा० '१५२'।१६।० हेट्ठिल्लाइं समोसरणाइं अवाएत्ता उवरिल्लाइं समोसरणाइं वा० वा० वा सा०।१७।० नव बंभचेराइं अवाएत्ता उवरिमसुयं वाएइ वा वा० सा० '१६९'।१८।० अवत्तं वाएइ वा० सा०।१९।० वत्तं न वाएइ नवा० सा०।२०।० अपत्तं वाएइ वा० सा०।२१।० पत्तं न वाएइ नवा० सा० '२१५'।२२। दोण्हंपि सरिसगाणं एक्कं संचिक्खावेइ एक्कं न संचिक्खावेइ एक्कं वाएइ एक्कं न वाएइ नवा० सा० '२२१'।२३।० आयरियउवज्झाएहिं अविदिन्नं गिरं आइयइ आइ० सा०।२४।० अन्नउत्थियं वा गारत्थियं वा वाएइ वा० वा सा०।२५।० पडिच्छइ प० सा०।२६।० एवं पासत्थं ।२७-२८। ओसन्नं ।२९-३०। कुसीलं ।३१-३२। नितियं ।३३-३४। संसत्तं '२४३' तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घाइयं ।३५-३६ ☆☆☆॥ एगुणवीसइमो उद्देसओ १९॥☆☆☆ जे भिक्खू मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अपलिउंचियं आलोएमाणस्स मासियं पलिउंचियं आलोएमाणस्स दोमासियं, एवं ववहारपढमुद्देसगमो णेयव्वो जाव दस गमा समत्ता एगत्तसो बहुत्तसोवि जाव सव्वमेवं सकयं एगओ साहणित्ता जाए य पट्ठवणाए पट्ठविए निव्विसमाणए पडिसेविज्जा सावि कसिणा तत्थेव आरूहेयव्वा सिया '३०९'।१-२२।० छम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारट्ठाणं (२४०) पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा वीसइराइया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं सवीसइराया दो मासा ।२३।० पञ्चमासियं० एवं चाउम्मासियं० एवं तेमासियं० एवं सोमासियं० मासियावि० जाव सवीसराइया दो मासा ।२४-२८।० सवीसराइयं दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० तेण परं दसराया तिण्णि मासा ।२९।० सदसरायतेमासियं परिहारट्ठाणं जाव तेण परं चत्तारि मासा ।३०।० चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं जाव तेण परं सवीसराइया चत्तारि मासा ।३१।० सवीसराइयं चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं जाव तेण परं सदसराया पञ्च मासा ।३२।० सदसरायं पञ्चमासियं परिहारट्ठाणं जाव तेण परं छम्मासा ।३३।० छम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मायिसं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं दिवड्ढो मासो ।३४।० एवं पञ्चमासियं चाउम्मासियं तेमासियं दोमासियं मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० दिवड्ढो मासो ।३५-३९।० दिवड्ढमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अंतरा मासियं० दो मासा ।४०। दोमासियं परिहरट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० अड्ढाइज्जा, एवं एत्तो पक्खे २ आरोवेयव्वो जाव छम्मासा पुण्णत्ति ।४१। (०दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए जाव तेणं परं अड्ढाइज्जा मासा ।४१।०) अड्ढाइज्जमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० तिण्णि मासा ।४२।० तेमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० अद्धट्ठा मासा ।४३।० अद्धुट्ठमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० चत्तारि मासा ।४४।० चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० अड्ढपञ्च मासा ।४५।० अड्ढपञ्चमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० पञ्च मासा ।४६।० पञ्चमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० अद्धछट्ठ मासा ।४७।० अद्धछट्ठमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे० छम्मासा ।४८।० दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरावणा जाव तेण परं अड्ढाइज्जा मासा ।४९।० अड्ढाइज्जमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा वीसइराइया आरोवणा० तेण परं सपञ्चराया तिण्णि मासा ।५०। सपञ्चरायं तेमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरोवणा जाव तेण परं सवीसइराया तिण्णि मासा ।५१। सवीसइरायं तेमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविअे अणगारे अन्तरा दोमासिअं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा वीसइराइया आरोवणा० तेण परं सदसराया चत्तारि मासा ।५२। सदसरायं चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएजजा अहावरा पक्खिया आरोवणा० तेण परं पञ्चूणा पञ्च मासा ।५३। पञ्चूणं पञ्चमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा वीसइराइया आरोवणा० तेणं परं अद्धछट्ठा मासा ।५४। अद्धछट्ठं मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविए अणगारे अन्तरा मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा पक्खिया आरोवणा० तेण परं छम्मासा '३६९'।५५। उपसंहार: '४२५' ॥

श्रीनिशीथच्छेदसूत्रं १

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org